हरिभूमि
सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार, 29 जून, 2025

11 गांवों में लगाए पोस्टर, ग्रामीणों को नशा न करने की दिलाई शपथ

12 टोहाना में घर में मिली मां बेटी की लाश, कैंसर से पीड़ित थी...

खबर संक्षेप

विदेश भेजने के नाम पर एक लाख रुपये हड़पे

रतिया। विदेश भेजने के नाम पर एक युवक के परिजनों से एक लाख रुपये हड़पने का मामला सामने आया है। इस मामले में रतिया पुलिस द्वारा आरोपी युवक के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। पुलिस को दी शिकायत में रतिया निवासी सुखचरण ने कहा है कि राजू वाजेवाला निवासी कुलां ने उससे कहा कि वह लोगों को विदेश भेजने का काम करता है। पोते के दस्तावेज और एक लाख रुपये राजू को दे दिए।

मायके में पति को बुलाकर पिटवाया, महिला गिरफ्तार

फतेहाबाद। पति को अपने मायके बुलाकर उसकी पिटाई करवाने के मामले में रतिया पुलिस ने महिला आरोपी को काबू किया है। थाना सदर रतिया के प्रभारी उपनिरीक्षक राजबीर ने बताया कि यह मामला मनदीप सिंह निवासी बलियाला की शिकायत पर दर्ज किया गया था। शिकायतकर्ता ने बताया कि उसकी शादी करीब चार वर्ष पूर्व ज्योति निवासी गांव सरदारेवाला से हुई थी। कुछ समय पहले वह मायके गई और फिर वापसी पर विवाद उत्पन्न हुआ। जब मनदीप उसे लेने ससुराल पहुंचा, तो कुछ लोगों ने उसे लाठियों से पीटा।

4 साल से फरार उद्घोषित अपराधी को किया काबू

फतेहाबाद। थाना शहर रतिया पुलिस ने चार साल से फरार चल रहे उद्घोषित अपराधी को काबू किया है। थाना प्रभारी उपनिरीक्षक रणजीत ने बताया कि फतेहाबाद न्यायालय द्वारा अभियोग संख्या 251/2020 धारा 379, 201,34 आईपीसी के तहत दर्ज मामले में आरोपी मनोज उर्फ विनोद पुत्र मदनलाल निवासी चंदन नगर, मॉडल टाऊन, भुना को न्यायालय के आदेशों की अनुपालना न करने पर उद्घोषित अपराधी घोषित किया गया था।

रिटायर्ड कर्मचारी संगठन की मासिक बैठक 1 को

फतेहाबाद। रिटायर्ड कर्मचारी संगठन फतेहाबाद की मासिक बैठक 01 जुलाई मंगलवार को प्रातः 10 बजे पुराना बस स्टैण्ड, जाट धर्मशाला के पास स्थित रेस्ट हाऊस में होगी। इस मीटिंग में रिटायर्ड कर्मचारियों की विभिन्न मांगों को लेकर चर्चा की जाएगी। इसके अलावा रिटायर्ड कर्मचारी संगठन की मांगों को लेकर राज्य कार्यकारिणी की सरकार से हुई बातचीत बारे भी सदस्यों को जानकारी दी जाएगी। यह जानकारी देते हुए संगठन के महासचिव सुभाष चन्द्र चौहान ने बताया कि इस बैठक की अध्यक्षता संगठन के जिला प्रधान मुंशीराम कम्बोज करेंगे वहीं निहाल सिंह मताना विशेष तौर पर भाग लेंगे।

अस्पताल के बाहर से मोटरसाइकिल चोरी

फतेहाबाद। वाहन चोरों ने टोहाना शहर से एक मोटरसाइकिल चोरी कर लिया। इस बारे पुलिस को शिकायत दर्ज करवाई गई है। पुलिस को शिकायत में जींद जिले के गांव सुल्हेड़ा निवासी नानू ने कहा है कि गत दिवस वह अपने प्लेटिना मोटरसाइकिल पर सवार होकर किसी काम से टोहाना आया था। इसी दौरान बाइक चोरी हो गई।

निशांत जैन अग्रवाल वैश्य समाज के विस अध्यक्ष नियुक्त

रतिया। अग्रवाल वैश्य समाज फतेहाबाद के जिला अध्यक्ष राजेंद्र मित्तल ने प्रदेश अध्यक्ष अशोक बुवानीवाला के निर्देशानुसार प्रदेश महासचिव राजेश सिंगला व बलराम गुप्ता से विचार करते हुए निशांत जैन एडवोकेट को टोहाना विधानसभा इकाई का अध्यक्ष नियुक्त किया है। निशांत जैन एडवोकेट को अध्यक्ष नियुक्त करने पर समाज के समस्त सदस्यों ने उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

आठ से शाम छह बजे तक होगा मतदान

कालांवाली नपा चुनाव आज, 16 हजार 161 मतदाता डालेंगे मत

सिरसा। पोलिंग पार्टियों को ईवीएम व अन्य चुनाव सामग्री देकर रवाना करते हुए। फोटो: हरिभूमि

पोलिंग पार्टियां चुनाव सामग्री लेकर रवाना

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

नगरपालिका कालांवाली के आम चुनाव के लिए सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई है। 29 जून रविवार को मतदान होगा, जिसके लिए शनिवार को सीडीएलयू के अंबेडकर भवन से पोलिंग पार्टियों को ईवीएम व अन्य चुनाव सामग्री देकर रवाना किया गया। इस दौरान रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम मोहित कुमार, सहायक रिटर्निंग अधिकारी एवं तहसीलदार रानियां शुभम शर्मा, सहायक रिटर्निंग अधिकारी एवं नायब तहसीलदार कुंवरदीप सिंह भी मौजूद रहे। इससे पहले कर्मचारियों को मतदान को लेकर ट्रेनिंग करवाई गई थी। कालांवाली नगरपालिका में प्रधान पद और 16 वार्ड सदस्य पद के चुनाव के लिए मतदान प्रक्रिया 29 जून रविवार सुबह आठ बजे से शुरू होगी जो शाम छह बजे तक चलेगी तथा आगमी 30 जून को सीडीएलयू सिरसा के अंबेडकर भवन में मतगणना होगी। मतदान प्रक्रिया के लिए 80 कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है। रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम मोहित कुमार ने बताया कि चुनाव को स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए व्यापक इंतजाम किए गए हैं। उन्होंने बताया कि कालांवाली नगरपालिका के 16 वार्डों के लिए 17 मतदान केंद्र बनाए गए हैं। मतदान प्रक्रिया संपन्न कराने के लिए 17 पोलिंग पार्टियां बनाई गई हैं तथा तीन पोलिंग पार्टियां रिजर्व रखी गई हैं और 80 कर्मचारियों को मतदान केंद्रों पर तैनात किया गया है। मतदान प्रक्रिया में रिजर्व समेत कुल 31 ईवीएम का प्रयोग होगा। उन्होंने बताया कि कालांवाली के 16 वार्डों में कुल मतदाताओं की संख्या 16 हजार 161 है जिनमें से 8550 पुरुष तथा 7611 महिला मतदाता है।

मतदान केंद्र के 200 मीटर के दायरे में कैंप लगाने पर रोक

रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम मोहित कुमार ने बताया कि कालांवाली नगरपालिका चुनाव के बीती 29 जून को होने वाले आम चुनाव में शांति और कानून व्यवस्था बनाए रखने के मद्देनजर जिलाधीश शांतनु शर्मा ने मतदान केंद्रों के 200 मीटर के दायरे में किसी भी उम्मीदवार या राजनीतिक दल द्वारा बूथ / कैंप लगाने पर रोक लगाई है। यदि किसी स्थान पर एक से अधिक मतदान केंद्र हैं, तो वहां भी केवल एक ही बूथ/कैंप की अनुमति दी जाएगी, जो 200 मीटर की सीमा से बाहर होना चाहिए। इनमें केवल मतदाता, मतदान अधिकारी, प्रत्याशी स्वयं, उनका चुनाव एजेंट, प्रत्येक प्रत्याशी का एक पोलिंग एजेंट ,राज्य चुनाव आयोग द्वारा अधिकृत व्यक्ति, ड्यूटी पर तैनात सरकारी कर्मचारी, मतदाता के साथ गोद में लिया बच्चा, दृष्टिहीन या अशक्त मतदाता की सहायता हेतु साथ आया व्यक्ति, पीठासीन अधिकारी द्वारा अनुमति प्राप्त अन्य आवश्यक व्यक्ति को प्रवेश की अनुमति होगी।

मनचलों पर पुलिस का शिकंजा

■ पटाखा बुलेट जब्त, नशे में ड्राइविंग पर कड़ी कार्रवाई

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

फतेहाबाद। नियमों की उल्लंघना करने वाले वाहन चालकों पर कार्रवाई करती पुलिस टीम। फोटो: हरिभूमि

फतेहाबाद पुलिस द्वारा सडक़ सुरक्षा और सामाजिक शांति को बनाए रखने हेतु सघन अभियान चलाया जा रहा है। नियमों का उल्लंघन करने वालों, खासकर बुलेट में मॉडिफाइड साइलेंसर लगाने, नशे में वाहन चलाने और सार्वजनिक स्थानों पर हुड़दंग मचाने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जा रही है। अभियान के दौरान, मॉडिफाइड साइलेंसर लगाकर बुलेट से तेज आवाज निकालने वाले युवकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करते हुए कई बुलेट मोटरसाइकिलें जब्त की गई। मौके पर ही मॉडिफाइड साइलेंसर हटवाए गए और चालकों को कानूनी कार्रवाई के साथ-साथ सामाजिक जिम्मेदारी का भी पाठ पढ़ाया गया। नशे में गाड़ी चलाने के मामलों में पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए चालकों को मौके पर गिरफ्तार किया। इन पर मोटर वाहन अधिनियम के तहत सख्त प्रावधानों के अंतर्गत चालान काटे गए और केस दर्ज किया गया। स्कूल, कॉलेज, बाजारों और सार्वजनिक स्थलों पर बेवजह घूमने वाले और छेड़छाड़ की प्रवृत्ति दिखाने वाले युवकों की पहचान कर उन्हें सख्त चेतावनी दी गई।

30 लाख की ठगी का तीसरा आरोपी काबू

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

■ नौकरी दिलवाने का झांसा देकर की थी ठगी

फतेहाबाद। पुलिस गिरफ्त में धोखाधड़ी मामले में गिरफ्तार युवक।

फर्जी भर्ती के नाम पर ठगी के एक मामले में भुना पुलिस ने तीसरे आरोपी प्रदीप कुमार उर्फ बब्बू पुत्र दलबीर सिंह निवासी जल्लोपुर को गिरफ्तार कर लिया है। इस मामले में पुलिस पहले ही दो अन्य आरोपियों कृष्ण पुत्र बालाराम और रितु पत्नी राधे श्याम को गिरफ्तार कर चुकी है। थाना भुना प्रभारी निरीक्षक सुरेंद्र ने शनिवार को इस बारे जानकारी देते हुए बताया कि यह मामला 3 अगस्त 2022 को विकास पुत्र सतपाल निवासी धोलू की शिकायत पर दर्ज किया गया था। शिकायत के अनुसार, आरोपियों ने मिलकर लगभग 30 लाख 65 हजार रुपये की ठगी की थी। शिकायतकर्ता के अनुसार, कृष्ण ने सेना में नौकरी दिलाने का झांसा देकर ठगी की शुरुआत की और अपने साथियों गुरमंगत सिंह, सतिंदर कौर, बब्बू, रमेश निवासी जल्लोपुर, रतिया तथा मिनाक्षी, रितु, रोहित, संदीप निवासी दिल्ली के साथ मिलकर एक फर्जी भर्ती योजना तैयार की। पीड़ितों का आरोप है कि शुरुआत में 8.5 लाख रुपये नकद लिए गए और बाद में किश्तों के माध्यम से कुल 30 लाख रुपये से अधिक की राशि वसूल की गई। आरोपियों ने एक फर्जी जॉइनिंग लेटर भी प्रदान किया, जो भारतीय सेना द्वारा अधिकृत नहीं था। जब पीड़ितों ने पैसे वापस मांगे, तो उन्हें चेक दिए गए, जो बैंक में बाउंस हो गए। विरोध करने पर उन्हें जान से मारने की धमकी भी दी गई। इसके अतिरिक्त, 18 अगस्त 2021 को आरोपियों ने पीड़ितों को पैसे लौटाने के बहाने हिसार बुलाया और वहां उनके खिलाफ झूठा अपहरण का मुकदमा दर्ज करवा दिया, जिससे उन्हें जेल जाना पड़ा।

बिना चर्चा लागू की गई यूनिफाइड पेंशन स्कीम को बताया पेआऊट स्कीम

■ विजेंद्र धारीवाल का सरकार पर तीखा वार, पुरानी पेंशन बहाली की मांग दोहराई

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

हरियाणा सरकार द्वारा हाल ही में कैबिनेट मीटिंग में घोषित की गई यूनिफाइड पेंशन स्कीम पर पेंशन बहाली संघर्ष समिति ने कड़ा ऐतराज जताया है। समिति के प्रदेश अध्यक्ष विजेंद्र धारीवाल ने इस योजना को 'पेआऊट स्कीम' करार देते हुए कहा कि यह कर्मचारियों की सामाजिक सुरक्षा से खिलवाड़ है और सरकार की मंशा एनपीएस में फंसे पैसे को शेयर बाजार में और झोंकने की है। राज्य ऑडिटर विजय भूना ने कहा कि यह स्पष्ट है कि एनपीएस कर्मचारियों की सामाजिक सुरक्षा में नाकाम रही है, और अब सरकार यूपीएस के नाम पर वही पुराना ढांचा थोंपने की कोशिश कर रही है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि सरकार संघर्ष समिति से वार्ता नहीं करती और पुरानी पेंशन योजना को बहाल नहीं करती, तो कर्मचारी आंदोलन के रास्ते पर जाएंगे। यूपीएस के खिलाफ मुख्य बिंदु उठाते हुए उन्होंने कहा कि यूपीएस में 50 प्रतिशत पेंशन केवल तब मिलती है जब सेवा 25 साल से अधिक हो, वो भी मार्केट आधारित कॉर्पस से जुड़ी शर्तों पर। सेवा के दौरान कर्मचारी वेतन और डीए का 10 प्रतिशत अंशदान देता है, जो रिटायरमेंट या मृत्यु पर भी वापिस नहीं मिलता।

कर्मचारी विरोध में, आंदोलन की दी चेतावनी

विजेन्द्र धारीवाल।

विजेंद्र धारीवाल व विजय भूना ने कहा कि सरकार बिना संघर्ष समिति से राय लिए कर्मचारियों पर यूपीएस थोप रही है, जबकि केंद्र सरकार की तरफ से भी जब यह विकल्प दिया गया था, तो 30 लाख केंद्रीय कर्मचारियों में से केवल 20 हजार ने ही इसे चुना, जिससे साफ होता है कि कर्मचारी यूपीएस को नहीं चाहते। उन्होंने कहा कि सरकार यदि वास्तव में कर्मचारियों के हितैषी है, तो पूर्व मुख्य सचिव की अध्यक्षता में गठित समिति के साथ चर्चा शुरू करें और ओपीएस लागू करे, वरना संघर्ष समिति आंदोलन के रास्ते पर जाने को बाध्य होगी।

गड़बड़ीः पीपीपी में रेहड़ी चालक के नाम तीन गाड़ियां

■ बीपीएल राशन कार्ड कटा, सभी सुविधाओं से हुआ वंचित

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

जिला में परिवार पहचान पत्र में गड़बड़ी का मामला सामने आया है। सुरतगढ़िया मोहल्ले में एक रेहड़ी चलाने वाले के नाम पर तीन गाड़ियां दर्ज कर दी गई।

इसके कारण उसका बीपीएल राशन कार्ड कट गया। इसका पता उसे तब चला, जब वह डिपो पर राशन लेने गया। बताया जा रहा है किवार्ड 19 में रहने वाले मनोज कुमार सब्जी की रेहड़ी लगाकर अपना परिवार चला रहे हैं। उनके परिवार पहचान पत्र में उनके परिवार के तीन सदस्यों के नाम पर गाडिय़ां दर्ज कर दी गईं। जब वह इस महीने राशन लेने गया तो पता चला कि उनका कार्ड से कट गया है। सीएससी सेंटर पर जाकर जांच कराई तो पता चला कि तीन गाडिय़ों के कारण कार्ड निरस्त किया गया है, जबकि ये गाडिय़ां पड़ोसियों की हैं। मनोज ने बताया कि वह किराए के मकान में रहते हैं और उनके पास सिर्फ एक साइकिल है। पीपीपी में उनकी वार्षिक आय 1 लाख रुपए दर्ज है, लेकिन महंगी गाडिय़ां उनके नाम पर दिखा दी गईं। अब राशन कार्ड कटने से परिवार बीपीएल से मिलने वाली सरकारी सुविधाओं से वंचित हो गया।

सिरसा। सब्जी बेचकर अपना गुजारा करते मनोज कुमार। फोटो: हरिभूमि

हजारों बीपीएल राशन कार्ड काटे

पूर्व पार्षद प्रतिनिधि अमित सोनी ने बताया कि सिरसा में फर्जी तरीके से वाहन दिखाकर बीपीएल कार्ड काटने के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। अप्रेल के बाद दूसरी बार हजारों बीपीएल राशन कार्ड काटे गए हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री से क्रीड कंपनी के सर्वे की जांच की मांग की है। इस गड़बड़ी के कारण गरीब परिवार सरकारी योजनाओं से मिलने वाली सुविधाओं से वंचित हो रहे हैं।

कंपनी कर्मचारी ने फंदा लगाकर दी जान

■ पुलिस ने मौके पर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया और मृतक के परिजनों को घटना की सूचना दी।

हरिभूमि न्यूज ⏭चोपटा

नाथूसरी चोपटा में भट्टूरोड पर निजी कंपनी में कार्यरत एक युवक ने मकान के अंदर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। युवक द्वारा आत्महत्या किए जाने के कारणों का पता नहीं लग पाया है। घटना की सूचना मिलने पर चोपटा पुलिस मौके पर पहुंची और शव को नीचे उतरवाकर पोस्टमार्टम के लिए सिरसा के नागरिक अस्पताल में पहुंचाया। पुलिस ने परिजनों को घटना की सूचना दे दी है। जानकारी के अनुसार करनाल के गांव निसिंग निवासी गुरकीरत सिंह पुत्र गुरमीत सिंह निजी कंपनी में कार्य करता था। वह भट्टू रोड पर एक किराए के मकान में रहता था। उसके साथ चार युवक और भी साथ में रहते थे। शुक्रवार रात्रि के समय सभी सो रहे थे। इसके बाद रात्रि के समय गुरकीरत अज्ञात कारणों के चलते फांसी लगा ली। इसके बाद सुबह जैसे ही पास में सो रहे युवक जागे तो उन्होंने फंदे पर लटके हुए गुरकीरत को देखा। इसके बाद आस पास के लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर स्थिति का जायजा लिया और मृतक के परिजनों को घटना की सूचना दी। पुलिस की ओर से बताया गया कि परिजनों के आने के बाद ही आगे की कार्रवाई की जाएगी। एएसआई महेंद्र सिंह ने बताया कि मृतक के जीजा गुरमीत सिंह निवासी तलवाड़ा हनुमानगढ़ राजस्थान के बयान पर मामला दर्ज कर इत्तेफाकिया मौत की कार्रवाई की है।

मृतक गुरकीरत सिंह का फाइल फोटो।

दो बहनों का इकलौता भाई था मृतक

जानकारी अनुसार मृतक गुरकीरत सिंह के पिता की साल 2007 में मौत हो चुकी थी। मृतक के दो बहने हैं। मृतक के जीजा गुरमीत सिंह ने बताया कि गुरकीरत पिछले 6-7 महीने से नाथूसरी चोपटा में किराए के मकान में रह रहा था और एक निजी कंपनी में कार्य करता था उन्हें आज सुबह सूचना मिली कि गुरकीरत ने फांसी लगाकर अपने जीवन लीला समाप्त कर ली।

पैरा खिलाड़ी मलकीत का एशियन पैरा चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम में चयन

रतिया। किंग्स ताइक्वांडो अकैडमी रतिया के पैरा खिलाड़ी मलकीत सिंह ने लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी,फगवाड़ा में सम्पन्न सिलेक्शन ट्रायल्स में स्वर्ण पदक जीतकर जुलाई में मलेशिया में होने वाली एशियन पैरा चैंपियनशिप के लिए अपना स्थान भारतीय टीम में सुनिश्चित किया। मलकीत सिंह ने पैरा वर्ग की पी-50 स्पोट्र्स क्लास में प्रतिभागिता करते हुए यह स्वर्णिम उपलब्धि हासिल की। अकादमी के डायरेक्टर व इंटरनेशनल रेफरी, कोच राजपाल पन्नू ने बताया कि ताइक्वांडो ओलंपिक खेलों व एशियाई गेम में एक प्रमुख खेल है। पैरा खिलाड़ियों के वर्ग में पैरालंपिक गेम्स, एशियाई पैरालंपिक गेम्स, वल्र्ड चैम्पियनशिप व एशियन चैम्पियनशिप प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। उन्होंने बताया कि फतेहाबाद जिले के पैरा खिलाडिय़ों के लिए राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने का यह सुनहरा अवसर साबित होगा। उन्होंने मलकीत सिंह की इस सफलता का श्रेय उसकी मेहनत, लगन और कभी हार न मानने की अद्भुत क्षमता को दिया और उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

लायंस क्लब ने मां की रसोई में की लंगर सेवा, 450 लोगों ने खाया भोजन

रतिया। लायंस क्लब रतिया टाउन द्वारा आज फूड फॉर लाइफ कार्यक्रम के तहत लगातार तीसरे दिन माँ की रसोई में लंगर सेवा का आयोजन किया गया। क्लब प्रधान विजय जिंदल ने बताया कि आज की लंगर सेवा शिव सोनी की दोहती गिरीशा की तरफ से की गई। आज लगभग450 लोगों ने स्वादिष्ट भोजन ग्रहण किया, जिसके तहत आज हलवा, रोटी, चावल, दाल, सब्जी, सलाद आदि वितरित किया गया। उन्होंने बताया कि शिव सोनी की बेटी अनुभा व दामाद सलिल मैहता द्वारा लंगर सेवा का सहयोग किया था। माँ की रसोई के प्रधान वीरेंद्र कुमार राजू ने सोनी परिवार का आभार प्रकट करते हाई कहा कि समाज के सहयोग से ही माँ की रसोई जरुरतमंद को भोजन उपलब्ध करवाने के सक्षम है। इस अवसर पर विजय जिंदल, शिव सोनी, लाल सिंह, सुरेश जैन, सत्य प्रकाश जैन, नरेंद्र ग्रोवर, मुनीश गोयल के अलावा गिरीशा, आस्था, अनुभा, सलिल मैहता, कुसुम सोनी, माँ की रसोई के सेवादार रमेश शर्मा, कृष्ण शर्मा, शाम लाल आदि उपस्थित थे।

मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल ने श्री श्याम हॉस्पिटल एंड मैटरनिटी होम सिरसा में शुरू की न्यूरोलॉजी ओपीडी सेवा

■ हर महीने के तीसरे शनिवार को उपलब्ध रहेगी सेवा

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटलए द्वारका ने शुक्रवार से शहर के प्रमुख श्री श्याम हॉस्पिटल एंड मैटरनिटी होम, सिरसा के साथ सांझेदारी में अपनी विशेष न्यूरोलॉजी ओपीडी सेवाओं की शुरुआत की घोषणा की। यह सेवा हर महीने के तीसरे शनिवार को दोपहर 1 बजे से 3 बजे तक उपलब्ध होगी। यह जानकारी डा. रजनीश कुमार, प्रिंसिपल डायरेक्टर, न्यूरोलॉजी और डा. आस्था बंसल कंसल्टेंट-न्यूरोलॉजी, मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, द्वारका ने मीडिया से रूबरू होते हुए दी। इस पहल पर बोलते हुए डा. रजनीश कुमार प्रिंसिपल डायरेक्टर न्यूरोलॉजी, मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, द्वारका ने बताया कि अक्सर हमारे पास सिरदर्द, माइग्रेन, चक्कर आना, बेहोशी, चलने में परेशानी, संतुलन या समन्वय की कमी, देखने, बोलने या निगलने में कठिनाई जैसी समस्याओं के साथ मरीज आते हैं। इस ओपीडी सेवा की शुरुआत के जरिए हमारा उद्देश्य सिरसा और आसपास के क्षेत्रों के लोगों को विश्वस्तरीय न्यूरोलॉजिकल उपचार उपलब्ध कराना है।

सिरसा। पत्रकारों से बातचीत करते डा. रजनीश कुमार व अन्य। फोटो: हरिभूमि

जटिल न्यूरोलॉजिकल बीमारियों का इलाज संभव

डा. आस्था बंसल कंसल्टेंट न्यूरोलॉजी, मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटलए द्वारका ने बताया कि वर्तमान समय में न्यूरोसाइंस के क्षेत्र में निरंतर प्रगति हो रही है और जटिल से जटिल न्यूरोलॉजिकल बीमारियों का सफल इलाज संभव हो गया है। इस ओपीडी के माध्यम से हम उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना चाहते हैं और न्यूरोलॉजिकल बीमारियों की समय रहते पहचान और रोकथाम को लेकर लोगों में जागरूकता लाना चाहते हैं। मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, द्वारका उन्नत तकनीक और समर्पित चिकित्सकीय टीम के साथ जटिल न्यूरोसर्जरी मामलों में बेहतर इलाज परिणामों के नए मानदंड स्थापित कर रहा है। अस्पताल जटिल न्यूरोलॉजिकल समस्याओं के उपचार के लिए प्रतिबद्ध है और निरंतर उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा सेवाएं प्रदान करता है।

स्मॉलकैप कंपनियां फिर उड़ान भरने को तैयार, दे सकती है अच्छा मुनाफा

● लंबी अवधि के निवेश का लक्ष्य बनाकर लगाएं पैसा ● पिछले माह निफ्टी स्मॉलकैप 100 में 14.7% में तेजी ● अब स्मॉलकैप में निवेश का हो सकता है सही वक्त ● 74% स्मॉलकैप कंपनियों की ऑपरेशनल एफिशिएंसी बेहतर

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

बाजार के परिदृश्य को देखते हुए स्मॉलकैप कंपनियां एक बार फिर उड़ान भरने के लिए तैयार हैं। ये कंपनियां लंबी अवधि में निवेशकों को अच्छा मुनाफा दे सकती हैं। जो लोगों को मालामाल कर देगीं। एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले महीने भारतीय शेयर बाजार में स्मॉलकैप शेयरों ने जबरदस्त तेजी दिखाई, जबकि निफ्टी 50 केवल मामूली बढ़ा। मार्च तिमाही के नतीजों से पता चला कि 74% स्मॉलकैप कंपनियों की ऑपरेशनल एफिशिएंसी बेहतर हुई है। 'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी से भी स्मॉलकैप कंपनियों को नई उड़ान मिल रही है, जो लंबी अवधि के निवेशकों के लिए सुनहरा मौका है। पिछला महीना भारत की अर्थव्यवस्था के लिए काफी अच्छा रहा। वैश्विक चुनौतियों और सीमा-पार तनावों के बावजूद मई महीने में भारतीय शेयर बाजारों ने तेज रिकवरी दिखाई। शेयर बाजारों में जहां एक ओर लार्जकैप इंडेक्स सीमित दायरे में घूमते रहे, वहीं असली हलचल स्मॉलकैप शेयरों में दिखी। ये छोटी कंपनियां उन निवेशकों के लिए सुनहरा मौका बन रही हैं, जो लंबी अवधि के लिए पोर्टफोलियो बनाना चाहते हैं।

स्मॉलकैप कंपनियों की विशेषताएं

- **उच्च जोखिम और उच्च रिटर्न :** स्मॉलकैप कंपनियों में निवेश करने से उच्च रिटर्न मिल सकता है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है क्योंकि इन कंपनियों का भविष्य अनिश्चित हो सकता है।
- **नए और छोटे व्यवसाय :** स्मॉलकैप कंपनियां अक्सर नए और छोटे व्यवसाय होते हैं जो अपने उत्पादों या सेवाओं को बाजार में स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।
- **विकास की गुंजाइश :** स्मॉलकैप कंपनियों में विकास की गुंजाइश अधिक होती है, जिससे निवेशकों को आकर्षित किया जा सकता है।
- **कम तरलता :** स्मॉलकैप कंपनियों के शेयरों में तरलता कम हो सकती है, जिससे निवेशकों को अपने शेयर बेचने में कठिनाई हो सकती है।

स्मॉलकैप कंपनियां वे होती हैं जिनका मार्केट कैपिटलाइजेशन कम होता है, आमतौर पर ये नए या छोटे व्यवसाय होते हैं, जिनमें विकास की गुंजाइश अधिक होती है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है। सेबी के अनुसार, स्मॉलकैप कंपनियां वे होती हैं जो मार्केट कैपिटलाइजेशन के मामले में 251वें स्थान से नीचे आती हैं।

बढ़ रहा रिटर्न

मार्च तिमाही के नतीजों के बाद एक अहम ट्रेंड सामने आया- टॉप 250 स्मॉलकैप कंपनियों में से 74% का रिटर्न ऑन कैपिटल एम्प्लॉइड दो अंकों में रहा। इसका मतलब यह है कि ये कंपनियां न केवल मुनाफा कमा रही हैं, बल्कि इनकी ऑपरेशनल एफिशिएंसी भी बेहतर हो रही है। इससे निवेशकों में स्मॉलकैप के प्रति भरोसा पैदा होगा और एक बार फिर निवेशक इन फंडों में निवेश कर अपने भविष्य को सुरक्षित कर सकेंगे।

स्मॉलकैप में निवेश का बढ़ता मौका

फिलहाल देखा जाए तो वैल्यूएशन की दृष्टि से बाजार में अभी एक अच्छा मौका है। बहुत सारे छोटे कंपनियों के शेयर अपने असली दाम से काफी सस्ते मिल रहे हैं। इसका मतलब है कि आप अच्छे बिजनेस वाले शेयर कम कीमत में खरीद सकते हैं। स्मॉलकैप शेयरों को ज्यादा जोखिम और ज्यादा मुनाफा वाली प्रोफाइल के लिए जाना जाता है, इसलिए इन्हें अक्सर कम रिस्क लेने वाले निवेशकों की पोर्टफोलियो में नजरअंदाज किया जाता रहा है, लेकिन अब इस सोच में बदलाव आ रहा है। जब बाजार में उतार-चढ़ाव कम हो रहा है, तो निवेशकों का रुख भी पॉजिटिव हो रहा है और वे ज्यादा जोखिम उठाने को तैयार हैं। यह बदलाव व्यापक सूचकांकों में भी दिखा है। जहां पिछले महीने निफ्टी 50 ने केवल 2.6% की मामूली बढ़त दर्ज की, वहीं निफ्टी स्मॉलकैप 100 ने प्रभावशाली 14.7% की तेजी दिखाई है।

लंबी अवधि में जबरदस्त मुनाफे के मौका

स्मॉलकैप यानी छोटी कंपनियों के शेयर, लंबे समय में बहुत अच्छा रिटर्न दे सकते हैं। पिछले 7 सालों में इन कंपनियों ने औसतन हर साल करीब 27.6% का मुनाफा दिया है, जो बड़ी कंपनियों के मुकाबले कहीं ज्यादा है। इन कंपनियों का दायरा भी काफी बड़ा होता है। ये बैंकिंग, हेल्थकेयर, एफएमसीजी और पावर जैसे कई सेक्टरों में ये फैली होती हैं। इसका मतलब है, आपको निवेश के लिए अलग-अलग इंडस्ट्री में मौके मिलते हैं।

'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी से स्मॉलकैप कंपनियों को नई उड़ान

ग्लोबल स्तर पर देखें तो भारत को 'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी का बड़ा फायदा मिल रहा है। इस स्ट्रेटजी के तहत कई मल्टीनेशनल कंपनियां अपनी मैन्युफैक्चरिंग भारत की तरफ शिफ्ट कर रही हैं। इससे देश में इंडस्ट्रियल ग्रोथ तेज होगी और खासतौर पर स्मॉलकैप मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों को स्केलेबिलिटी और विस्तार का बड़ा मौका मिलेगा। आज के बदलते बाजार में स्मॉलकैप शेयर निवेशकों को एक अलग तरह का एक्सपोजर देते हैं। जहां कम कीमत पर निवेश के साथ कमाई की बड़ी संभावना होती है जो लोग लंबी अवधि के लिए निवेश सोच रहे हैं और थोड़ा रिस्क लेने को तैयार हैं, उनके लिए यह वक्त स्मॉलकैप में निवेश बढ़ाने और पोर्टफोलियो को मजबूत करने का सही मौका है।

ज्यादा रिटर्न के लिए लोग रिस्क लेने को तैयार, एमएफ में बढ़ रहा निवेश का क्रेज

ऑप्शन
बिजनेस डेस्क

- अब कम हो रहा बैंक एफडी का क्रेज, निवेश के नए ऑप्शन ढूंढ़ रहे लोग
- अब लोग बैंक में पैसे जमा करने के बजाय म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार में निवेश कर रहे
- यहां उन्हें ज्यादा फायदा लाभ मिल रहा, एसआईपी के जरिये निवेश ज्यादा पॉपुलर

बढ़ती महंगाई के इस जमाने में लोग निवेश के नए-नए विकल्प खोज रहे हैं। निवेशकों में बैंक एफडी का क्रेज घटता जा रहा है। यही कारण है कि बैंक एफडी की लोकप्रियता काफी कम हो रही है। भारतीय लोग अब बैंक में पैसे जमा करने के बजाय दूसरी जगहों पर निवेश कर रहे हैं। आजकल लोगों के बीच में म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार जैसी जगह निवेश के लिए ज्यादा पॉपुलर हो रही हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन जगहों पर बैंक से ज्यादा फायदा मिल रहा है। यह जानकारी रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के आंकड़ों से पता चली है। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, लोगों की बैंक टर्म डिपॉजिट्स (एफडी, आरडी) में हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2020 के अंत में 50.54% थी। वित्त वर्ष 2025 के अंत में यह घटकर 45.77% हो गई। इसका मतलब है कि लोग अब बैंकों में पहले जितना पैसा जमा नहीं कर रहे हैं। वे निवेश के दूसरे विकल्पों पर ज्यादा भरोसा जता रहे हैं। चूंकि इन विकल्पों में उन्हें एफडी से ज्यादा लाभ मिल रहा है जो महंगाई को मात देने में सक्षम है। अब लोग लंबी अवधी के लिए एसआईपी के जरीये और शेयर बाजार में निवेश को ज्यादा महत्व दे रहे है। महंगाई के दौर को देखते हुए लोग अब ज्यादा रिस्क लेने को भी तैयार हैं, ताकि भविष्य के लिए कम समय में अच्छा पैसा एकत्र कर सकें। इसलिए भी निवेशकों में फिक्स डिपोजिट यानी बैंक एफडी का क्रेज घटता जा रहा है।

ब्याज दरों में हुआ बदलाव

जानकारों का कहना है कि इस दौरान ब्याज दरों में बदलाव हुआ है। रिजर्व बैंक ने कोविड महामारी के दौरान मार्च 2020 से मई 2022 के बीच प्रमुख रेपो दर को 115 बेसिस पॉइंट्स (1.15 प्रतिशत अंक) तक कम कर दिया था। फिर बाद में इसे 225 बेसिस पॉइंट्स तक बढ़ा दिया। हाल ही में, रिजर्व बैंक ने ब्याज दरों को कम करना शुरू कर दिया है। उसने फरवरी में 25 बेसिस पॉइंट्स, अप्रैल में 25 बेसिस पॉइंट्स और इस महीने की शुरुआत में 50 बेसिस पॉइंट्स की कटौती की है। कुल मिलाकर, ब्याज दरें 1 प्रतिशत कम हो गई हैं। इससे भी लोगों में एफडी के प्रति रुझान कम हुआ है और लोगों ने एफडी की बजाय एसआईपी में ज्यादा दिलचस्पी दिखाई है।

म्यूचुअल फंड में बढ़ी हिस्सेदारी

रिजर्व बैंक के आंकड़ों से पता चलता है कि बचत जमा में व्यक्तियों की हिस्सेदारी पिछले पांच सालों में लगभग 77% पर स्थिर रही है। इसका मतलब है कि लोग अभी भी बचत खाते में पैसा रख रहे हैं। वे म्यूचुअल फंड में भी खूब निवेश कर रहे हैं। अप्रैल तक 23 करोड़ म्यूचुअल फंड अकाउंट्स में से 91% खाते व्यक्तियों के हैं। मई 2021 में यह आंकड़ा 10 करोड़ से थोड़ा ही ज्यादा था। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया के आंकड़ों से यह जानकारी मिली है।

अलग-अलग कर रहे बचत

रिजर्व बैंक के अर्थशास्त्रियों के एक रिसर्च पेपर के अनुसार, भारतीय परिवारों की वित्तीय बचत के पोर्टफोलियो में बदलाव देखा गया है। इसका मतलब है कि लोग अब अपनी बचत को अलग-अलग जगहों पर लगा रहे हैं। बैंकों में जमा की हिस्सेदारी समय के साथ कम हुई है, जबकि इंश्योरेंस और म्यूचुअल फंड में निवेश बढ़ा है। वहीं लोग शेयर बाजार, गोल्ड और सिल्वर में भी निवेश को बढ़ावा देने लगे हैं।

गिरावट का कारण यह भी

एक बड़े बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री ने कहा कि जमा में गिरावट का कारण यह है कि लोगों की बचत कम हो रही है और वे शेयर बाजार जैसे अन्य निवेश विकल्पों में ज्यादा पैसा लगा रहे हैं। म्यूचुअल फंड के प्रबंधन के तहत संपत्ति 30 अप्रैल को बढ़कर 69.50 लाख करोड़ रुपये हो गई। वित्त वर्ष 2020 के अंत में यह 22.26 लाख करोड़ रुपये थी। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में लोगों का निवेश बहुत तेजी से बढ़ा है। एक अन्य बैंक के अर्थशास्त्री ने कहा कि यह बाजार की वजह से है, लेकिन जरूरी नहीं कि जनसांख्यिकी के कारण हो।

रिस्क ले रहे लोग

दिसंबर 2024 में रिजर्व बैंक के एक पेपर में कहा गया था कि बचत करने वालों का तरीका बदल रहा है। साल 2022 में 17.8% भारतीय परिवारों ने जोखिम वाली संपत्तियों में निवेश किया था। वहीं साल 2019 में यह आंकड़ा 15.7% था। जोखिम वाली संपत्तियां मतलब ऐसी जगहें जहां पैसा डूबने का खतरा होता है, जैसे कि शेयर बाजार।

क्या है एफडी में निवेश

एफडी (फिक्स्ड डिपॉजिट) में निवेश एक प्रकार का निवेश है जिसमें आप एक निश्चित अवधि के लिए अपने पैसे को बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान में जमा करते हैं और बदले में एक निश्चित ब्याज दर प्राप्त करते हैं।

- निश्चित आयः एफडी में निवेश करने से आपको एक निश्चित आय प्राप्त होती है जो आपके पैसे को बढ़ाने में मदद करती है।
- जोखिम मुक्तः एफडी में निवेश जोखिम मुक्त होता है क्योंकि आपका पैसा बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान के पास जमा होता है।
- लिक्विडिटीः एफडी में निवेश करने से आपको अपने पैसे को आवश्यकता पड़ने पर निकालने की सुविधा होती है, हालांकि इसमें कुछ शर्तें और जुर्माना हो सकता है।
- कर लाभः एफडी पर ब्याज आय पर कर लगता है, लेकिन कुछ प्रकार के एफडी जैसे कि टैक्स सेवर एफडी पर कर लाभ मिलता है।

एसआईपी में निवेश के लाभ

- एसआईपी में निवेश एक प्रकार का निवेश है जिसमें आप नियमित अंतराल पर एक निश्चित राशि का निवेश म्यूचुअल फंड में करते हैं।
- नियमित निवेशः एसआईपी में निवेश करने से आपको नियमित अंतराल पर निवेश करने की आदत पड़ती है।
- रुपये कॉस्ट एवरेजिंगः एसआईपी में निवेश करने से आपको रुपये कॉस्ट एवरेजिंग का लाभ मिलता है, जिससे आपको बाजार की उतार-चढ़ाव से बचने में मदद मिलती है।
- लंबी अवधि का निवेशः एसआईपी में निवेश करने से आपको लंबी अवधि के लिए निवेश करने का अवसर मिलता है, जिससे आपको अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है।
- विविधीकरणः एसआईपी में निवेश करने से आपको विभिन्न प्रकार के म्यूचुअल फंड में निवेश करने का अवसर मिलता है, जिससे आपको अपने पोर्टफोलियो को विविध बनाने में मदद मिलती है।

पांच साल के रिटर्न चार्ट पर स्मॉलकैप फंड सबसे आगे

टॉप 25 में 13 स्कीम ने 33 से 38% सालाना मिला रिटर्न दिया, म्यूचुअल फंड में स्मॉलकैप कैटेगरी हाई रिटर्न का बेहतर विकल्प है, निवेश के लिए लक्ष्य कम से कम 5 से 7 साल का रखना होना जरूरी

रिटर्न
बिजनेस डेस्क

यदि आप भी निवेश कर रहे हैं या करने जा रहे हैं तो म्यूचुअल फंड की स्मॉलकैप कअेगरी आपके लिए निवेश का बढ़िया विकल्प साबित हो सकती है। इसके लिए आपको थोड़ा सयंम के साथ निवेश का लक्ष्य तय करना होगा। इस श्रेणी में अच्छा रिटर्न लेने के लिए आपको निवेश का लक्ष्य कम से कम 5 से 7 साल को लेकर चलना होगा। फाइनेंशियल एडवाइजर्स की यह सलाह रिटर्न चार्ट देखकर बिल्कुल सही साबित होती है। बीते 5 साल या 60 महीनों के दौरान रिटर्न के मामले में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले म्यूचुअल फंड स्कीम पर नजर डालें तो स्मॉलकैप फंड्स ने बाजी मार ली है। 5 साल के टॉप 25 स्कीम में 13 स्कीम स्मॉलकैप फंड कैटेगरी की हैं, जिनमें 33 से 38 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न मिल रहा है। 5 साल में 38 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न से कैलकुलेशन करें तो यह रिटर्न करीब 5 गुना होता है। यानी 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न वाली स्कीम ने 5 साल में निवेशकों का पैसा 5 गुना बढ़ा दिया। वहीं, 33 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न से कैलकुलेशन करें तो यह करीब 4 गुना रिटर्न होगा। इसका मतलब है कि 33 फीसदी सीएजीआर रिटर्न वाली स्कीम ने 5 साल में निवेशकों का पैसा 4 गुना बढ़ा दिया।

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड टॉपर

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड 5 साल में 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न के साथ न सिर्फ स्मॉलकैप कैटेगरी का बल्कि ओवरआल भी टॉपर रहा है। इस फंड ने 5 साल में 1 लाख का निवेश 5 लाख रुपये बना दिया। इसके बाद बेहतर प्रदर्शन करने वाली टॉप 5 में शामिल अन्य स्कीम बंधन स्मॉलकैप फंड ने 37.32% एनुअलाइज्ड रिटर्न, बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड ने 36% एनुअलाइज्ड रिटर्न, इडेलवाइस स्मॉलकैप फंड ने 35.50% एनुअलाइज्ड रिटर्न और एचएसबीसी स्मॉलकैप फंड ने 35.35% रिटर्न दिया है।

ये हैं 5 साल के टॉप 13 फंड

1. **निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड : 38%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.50% सालाना रहा है. फंड का लेटेस्ट एयूएम 63,007 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.65% है।
2. **बंधन स्मॉलकैप फंड : 37.32%**
ये स्कीम 25 फरवरी 2020 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 35.23% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 11,744 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.39% है।
3. **बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड : 36%**
ये स्कीम 19 दिसंबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 28.40% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 1,819 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.53% है।
4. **इडेलवाइस स्मॉलकैप फंड : 35.50%**
ये स्कीम 7 फरवरी 2019 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 27.84% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 4,580 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.43% है।
5. **एचएसबीसी स्मॉलकैप फंड : 35.35%**
ये स्कीम 12 मई 2014 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 21.12% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 16,061 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.63% है।
6. **टाटा स्मॉलकैप फंड : 35%**
ये स्कीम 12 नवंबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.31% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 10,529 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.34% है।
7. **इन्वेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड : 35%**
ये स्कीम 30 अक्टूबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.74% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 6,823 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.44% है।
8. **केनरा रोबोको स्मॉलकैप फंड : 34.80%**
ये स्कीम 15 फरवरी 2019 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.64% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 12,368 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.47% है।
9. **एचडीएफसी स्मॉलकैप फंड : 34.33%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 20% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 34,032 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.73% है।
10. **कोटक स्मॉलकैप फंड : 33.55%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 20.26% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 17,329 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.55% है।
11. **आईसीआईसीआई प्रू स्मॉलकैप फंड : 33.17%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 17.84% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 8,254 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.73% है।
12. **सुंदरम स्मॉलकैप फंड : 33%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 18.72% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 3,311 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.86% है।
13. **एलआईसी एमएफ स्मॉलकैप फंड : 32.65%**
ये स्कीम 21 जून 2017 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 16.13% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 576 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.92% है।

फाइनेंशियल एडवाइजर्स भी बोले, लक्ष्य तय कर लंबी अवधि के लिए निवेश करें, निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड 5 साल में 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न के साथ टॉपर

कम जोखिम में ज्यादा रिटर्न चाहते हैं तो अपनाएं म्यूचुअल फंड्स ट्रेप्स का फंडा

- *ट्रेप्स के जरिये कर सकते हैं अच्छी कमाई, हर निवेशक रखे जानकारी*
- *यह टूल न तरलता को आसानी से मैनेज करने में मदद करता है*
- *यह रिटर्न भी बढ़ाता है और पोर्टफोलियो को भी मजबूत बनाता है*
- *एफएफ के लिए बेहतर रिटर्न, सुरक्षित निवेश और शानदार लिक्विडिटी*
- *ट्रेप्स में एक पार्टी ट्रेजरी बिल्स को दूसरी पार्टी को बेचती है*

जानकारी
बिजनेस डेस्क

क्या म्यूचुअल फंड्स को कम जोखिम में ज्यादा रिटर्न मिल सकता है? तो इसका जवाब है हां! ट्रेप्स (ट्रेजरी बिल्स रीपरचेज) नाम के स्मार्ट टूल से म्यूचुअल फंड्स अपनी लिक्विडिटी को मैनेज करते हुए रिटर्न बढ़ाते हैं और पोर्टफोलियो को मजबूत बनाते हैं। ये टूल उन्हें न सिर्फ अपनी तरलता को आसानी से मैनेज करने में मदद करता है, बल्कि रिटर्न भी बढ़ाता है और पोर्टफोलियो को भी मजबूत बनाता है। ट्रेप्स की मदद से म्यूचुअल फंड्स सरकार की सिक्योरिटीज का सहारा लेते हुए शॉर्ट-टर्म में फंड्स खरीदने और बेचने का काम कर सकते हैं। तो चलिए, जानते हैं कि ट्रेप्स कैसे काम करता है और ये क्यों म्यूचुअल फंड्स के लिए एक शानदार टूल है। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि यह सरकारी सिक्योरिटीज पर बेस्ड शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट का तरीका कैसे काम करता है और आपके निवेश को कैसे बेहतर बना सकता है।

ट्रेप्स यानी 'ट्रेजरी बिल्स रीपरचेज' एक शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट का तरीका है, जो निवेशकों को इस्तेमाल ना होने वाले पैसों से रिटर्न कमाना में मदद करता है। इसे खासतौर पर बैंक, फाइनेंशियल इंस्टिट्यूशन और म्यूचुअल फंड्स इस्तेमाल करते हैं, ताकि वो अपनी कमाई को बढ़ा सकें। ट्रेप्स में एक पार्टी ट्रेजरी बिल्स को दूसरी पार्टी को बेचती है और फिर एक तय तारीख और कीमत पर इन्हें वापस खरीदने का समझौता करती है. ये लेन-देन सरकार की सिक्योरिटी से सुरक्षित होता है, इसलिए इसमें जोखिम कम होता है। मान लीजिए, किसी म्यूचुअल फंड के पास ज्यादा पैसा पड़ा है और वो उसे ऐसा निवेश करना चाहता है, जिसमें लिक्विडिटी बनी रहे। तब वो उस पैसे को ट्रेप्स के जरिए निवेश कर सकता है। इस तरीके से म्यूचुअल फंड को बिना पैसा जमा किए ही ब्याज मिल जाता है और उसकी लिक्विडिटी भी बनी रहती है।

म्यूचुअल फंड्स में कैसे काम करता है ट्रेप्स

मान लीजिए, किसी म्यूचुअल फंड को अचानक बड़े अमाउंट की जरूरत पड़ गई, जैसे कि कस्टमर्स के द्वारा पैसे निकालने के कारण। ऐसे में वह ट्रेप्स का इस्तेमाल कर सकता है। इससे उसे अपनी लंबी अवधि के इन्वेस्टमेंट्स को नुकसान में बेचने की जरूरत नहीं होती। ट्रेप्स सरकारी सिक्योरिटीज पर बेस्ड होते हैं, इसलिए ये काफी सुरक्षित माने जाते हैं। ट्रेप्स म्यूचुअल फंड्स के लिए एक शानदार तरीका है, जो उन्हें सेफ्टी, लिक्विडिटी और बेहतर रिटर्न्स का अच्छा संतुलन देता है।

ट्रेप्स के प्रमुख फायदे

- निवेशकों के लिए ज्यादा रिटर्न्स : जब बाजार में ब्याज दरें बढ़ी होती हैं, तो ट्रेप्स के जरिए म्यूचुअल फंड्स अपनी खाली पड़ी नकदी से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। इसमें वह उस फंड का इस्तेमाल करते हैं, जिसे वह उस समय शेयर मार्केट में निवेश नहीं करना चाहते हैं।
- नियमों का पालन : सेबी ने यह नियम बनाया है कि म्यूचुअल फंड्स को अपनी लिक्विड एसेट का एक हिस्सा ट्रेप्स में निवेश करना होगा। इससे निवेशकों को यह भरोसा मिलता है कि उनके पैसे सुरक्षित हैं और सभी नियमों का पालन हो रहा है।
- फास्ट लिक्विडिटी : ट्रेप्स की सबसे अच्छी बात यह है कि म्यूचुअल फंड्स को जल्दी से पैसा मिल जाता है। जब किसी को पैसे की जरूरत होती है, तो ट्रेप्स से वे जल्दी नकदी ले सकते हैं।
- डायवर्सिफिकेशन : म्यूचुअल फंड्स के पोर्टफोलियो को अलग-अलग प्रकार के निवेशों में बांटना जरूरी है, ताकि जोखिम कम हो। ट्रेप्स इस डायवर्सिफिकेशन में मदद करता है और म्यूचुअल फंड्स को बाजार की उतार-चढ़ाव से बचाता है।
- ट्रेप्स म्यूचुअल फंड्स के लिए एक बेहतरीन तरीका है, जो उन्हें ज्यादा रिटर्न्स, सुरक्षित पोर्टफोलियो और पैसे की सुरक्षा देता है।

ट्रेप्स की विशेषताएं

- अल्पकालिक निवेश : ट्रेप्स अल्पकालिक निवेश विकल्प है जिसमें निवेश की अवधि आमतौर पर कुछ दिनों से लेकर कुछ महीनों तक होती है।
- सरकारी समर्थन : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको सरकारी समर्थन मिलता है, जो इसे एक सुरक्षित निवेश विकल्प बनाता है।
- लिक्विडिटी : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको उच्च लिक्विडिटी मिलती है, जिससे आप अपने पैसे को आवश्यकता पड़ने पर निकाल सकते हैं।

ट्रेप्स के लाभ

- सुरक्षित निवेश : ट्रेप्स एक सुरक्षित निवेश विकल्प है क्योंकि इसमें सरकारी समर्थन होता है।
- निश्चित आय : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको निश्चित आय प्राप्त होती है।
- लिक्विडिटी : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको उच्च लिक्विडिटी मिलती है।

खबर संक्षेप

हत्या के मामले में वांछित भगौड़ा आरोपी काबू

चोपटा। जिला पुलिस सिरसा द्वारा चलाए जा रहे अपराध व अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत कार्यवाही करते हुए जिला की थाना शहर सिरसा की पुलिस पार्टी द्वारा अभियोग संख्या 635 दिनांक 24.10.2009 धारा 302/34 भा.द.स. थाना शहर सिरसा में वांछित भगौड़ा आरोपी रामुदीत पुत्र विफन भैया निवासी बेला जिला गया (बिहार) को गिरफ्तार किया है। उप निरीक्षक संदीप कुमार प्रबंधक थाना शहर सिरसा ने बताया कि गिरफ्तार किए गए युवक को अदालत में पेश किया गया व पांच दिन पुलिस हिरासत प्राप्त किया गया।

चोरी के दो आरोपी काबू चोरीशुदा सामान बरामद

चोपटा। सिविल लाइन थाना पुलिस ने मकान में से दो मोटर चोरी की वारदात को अंजाम देने वाले आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की पहचान सुनिल कुमार निवासी सेक्टर-19 सिरसा व प्रवीण निवासी सेक्टर-19 सिरसा के रूप में हुई है। पुलिस को दी शिकायत में पीड़ित महिला भागवंती निवासी सेक्टर 19 सिरसा ने बताया कि बीती 26 जून को दिन में अज्ञात युवकों ने उसके घर में घुसकर दो पानी की मोटर चोरी करके ले गए हैं।

मंदिर स्थापना के उपलक्ष्य में होगा धार्मिक कार्यक्रम

सिरसा। श्री गणेश धर्मार्थ न्यास के तहत संचालित श्री गणेश रघुनाथ मंदिर का स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया जाएगा। न्यास के प्रबंधक वैद्य महावीर प्रसाद ने बताया कि मंदिर का स्थापना दिवस आगामी 4 जुलाई को है। इस मौके पर मंदिर के शिवालय में मूर्तियों को बदलकर पीतल की मूर्तियां स्थापित की जाएंगी। मूर्तियों की स्थापना के लिए 2 जुलाई को पूजा आरंभ हो जाएगी जबकि आगामी 4 जुलाई को मूर्तियों की स्थापना की जाएगी।

इनेलो महिला प्रकोष्ठ का हुआ विस्तार

चोपटा। इंडियन नेशनल लोकदल की महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश प्रभारी सुनैना चौटाला व प्रदेशाध्यक्ष तनुजा कुरुक्षेत्र ने शनिवार को पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभय सिंह चौटाला, प्रदेशाध्यक्ष रामपाल माजरा, इनेलो के डबवाली विधायक आदित्य देवीलाल चौटाला, रानियां के विधायक अर्जुन चौटाला से विमर्श के बाद अपने संगठन का विस्तार किया है। इस विस्तार के तहत ऐलनाबाद से हरविंद्र कौर सग्गु को महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश महासचिव व डबवाली से सीतादेवी को प्रदेश सचिव पद की जिम्मेदारी सौंपी है। इन नियुक्ति पर इनेलो के जिलाध्यक्ष जसवीर सिंह जस्सा ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए दोनों पदाधिकारियों को अपनी ओर से शुभकामनाएं दी हैं।

श्री धेनु मानस यज्ञ के पूर्ण होने पर हवन यज्ञ

उकलाना। श्री कृष्ण गौशाला उकलाना द्वारा श्री धेनु मानस यज्ञ का आयोजन हुआ। इसमें संत राजेंद्रानंद महाराज के मुखारविंद से क्षेत्र की जनता निहाल हुई। इस यज्ञ में प्रतिदिन सैकड़ो की संख्या में श्रद्धालुओं ने गोमाता की कथा का सार सुना और गोसेवा के लिए प्रेरित हुए। श्री धेनु मानस यज्ञ समापन होने पर हवन यज्ञ एवं भंडारे का आयोजन हुआ जिसमें सैकड़ो की संख्या में महिला व पुरुषों ने भाग लिया।

गुजवि ने परीक्षा परिणाम किए घोषित

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न विषयों के परीक्षा परिणाम घोषित किए गए हैं। विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक प्रो. यशपाल सिंगला ने बताया कि दिसम्बर 2024 में आयोजित एमएससी साइकोलॉजी कोर्स कोड-111 प्रथम सेमेस्टर (रिअपीयर व मेन) बैच 2022, 2023 व 2024, एमएससी साइकोलॉजी कोर्स कोड-111 तृतीय सेमेस्टर (रिअपीयर व मेन) बैच 2022 व 2023, एमए हिंदी चतुर्थ सेमेस्टर (मेन) बैच 2023, एमए हिंदी चतुर्थ सेमेस्टर (रिअपीयर) बैच 2021-2022, एमएड तृतीय सेमेस्टर (रिअपीयर) बैच 2022 का परीक्षा परिणाम घोषित किया गया है।

फतेहाबाद पुलिस का जागरूकता अभियान जारी

गांवों में लगाए पोस्टर, ग्रामीणों को नशा न करने की दिलाई शपथ

- पुलिस अधिकारियों ने किया संबोधित, नशा केवल व्यक्ति के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को ही नहीं, बल्कि उसके परिवार पर भी गंभीर रूप से प्रभावित डालता है

हरिभूमि न्यूज ⏭|फतेहाबाद

फतेहाबाद। युवाओं को नशा न करने की शपथ दिलाते पुलिस अधिकारी। फोटो : हरिभूमि

एसपी सिद्धांत जैन के दिशा-निर्देशन में फतेहाबाद जिले में नशा मुक्त समाज के निर्माण हेतु निरंतर जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के अंतर्गत फतेहाबाद पुलिस द्वारा नशा मुक्त घोषित गांवों में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनका उद्देश्य लोगों को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराना और समाज को नशा मुक्त बनाना है। कार्यक्रम के दौरान पुलिस टीम ने संबंधित गांवों का दौरा करते हुए प्रमुख सार्वजनिक स्थलों पर 'नशा मुक्त गांव' के संदेश वाले प्रेरणादायक पोस्टर लगाए। इन पोस्टरों के माध्यम से ग्रामीणों को यह संदेश दिया गया कि उनका गांव एक उदाहरण बन चुका है और अब पूरे समाज को इस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। इसके साथ ही, पुलिस अधिकारियों ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए नशे से दूर रहने की अपील की और उन्हें बताया कि नशा केवल व्यक्ति के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को ही नहीं, बल्कि उसके परिवार, सामाजिक संबंधों और भविष्य को भी गंभीर रूप से प्रभावित करता है। इस मौके पर उपस्थित सभी लोगों को नशा न करने की सामूहिक शपथ भी दिलाई गई, जिसमें युवाओं ने विशेष उत्साह के साथ भाग लिया। पुलिस टीम ने ग्रामीणों से यह भी आग्रह किया कि यदि वे अपने आस-पास किसी नशा संबंधित गतिविधि को देखें तो तुरंत पुलिस को सूचना दें, ताकि दोषियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जा सके। इसके साथ ही, युवाओं को नशे से बचाने के लिए परिवार और समाज को मिलकर प्रयास करने का आह्वान किया गया।

डबवाली। धरनारत सफाई कर्मचारियों के साथ विधायक आदित्य चौटाला।

सफाई कर्मचारियों की मांगें विधानसभा में उठाई जाएंगी : आदित्य देवीलाल

हरिभूमि न्यूज ⏭|डबवाली

अपनी वेतन वृद्धि एवं ठेकेदारी प्रथा को समाप्त करने की मांग को लेकर डबवाली में पिछले 19 दिनों से धरने पर बैठे कच्चे सफाई कर्मचारियों एवं कचरा गाड़ी चालकों द्वारा दिए जा रहे धरने को डबवाली के विधायक आदित्य देवीलाल चौटाला एवं इनेलो जिलाध्यक्ष जसवीर सिंह जस्सा ने उनकी मांगों को विधानसभा में उठाने का भरोसा देकर समाप्त करवाया। इस दौरान इनेलो विधायक आदित्य देवीलाल चौटाला व इनेलो जिलाध्यक्ष जसवीर सिंह जस्सा दोनों संयुक्त रूप से कच्चे सफाई कर्मचारियों एवं कचरा गाड़ी चालकों द्वारा दिए जा रहे धरनास्थल पर पहुंचे और उनकी मांगों का पुरजोर समर्थन किया। इस दौरान उनकी मांगों को सुनने के बाद इनेलो विधायक आदित्य देवीलाल चौटाला ने उनकी मांगों को जायज बताया।

उन्होंने कहा कि ये वे मेहनतकश लोग हैं जो जिनकी वजह से हर दिन शहर को स्वच्छ रखने में मदद मिलती है। ये अति दुर्भाग्यपूर्ण है कि इन मेहनतकश लोगों को अपना हक मांगने के लिए सडक़ों पर उतरना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि शासन प्रशासन को चाहिए था कि इन मेहनतकश लोगों की आवाज सुनकर उनकी मांगों को पूरा करवाया जाता, मगर दुर्भाग्य है कि न तो भाजपा शासन की ओर से कोई नेता अथवा उनका प्रतिनिधि इनकी आवाज सुनने के लिए यहां पहुंचा और न ही प्रशासन का कोई अधिकारी। ऐसे में विकास की बातें करने वाली सरकार का असली चेहरा जनता के समक्ष आ गया है।

श्री गुरुनानक देव महाराज के सिरसा आगमन दिवस पर बांटे लड्डू

- सभी गणमान्यजनों को सिरोपा पहनाकर किया अभिनंदन

हरिभूमि न्यूज ⏭|सिरसा

सिरसा। सोसायटी की अध्यक्षा तृप्ता चिटकारा अतिथियो को सिरोपा पहनाकर उनका अभिनंदन करते हुए। फोटो : हरिभूमि

इतिहास में दर्ज कि आज के दिन श्री गुरुनानक देव महाराज के सिरसा में आने के पवित्र दिवस को लेकर तृप्ता वैल्फेयर सोसायटी की अध्यक्ष तृप्ता चिटकारा ने शनिवार को शिव चौक के समीप एक छबील लगाकर आमजन में लड्डुओं का वितरण किया।

कार्यक्रम में मुख्यातिथि समाजसेवी डॉ. इंद्र गोयल व पूर्व इंस्पेक्टर संजीव देवगुण थे जबकि विशिष्ट अतिथियों में आम आदमी पार्टी के युवा नेता मनीष मेहता, दीपक सेठी, रमेश साहुवाला, मयंक बत्रा, बंटी, संजु कुक्कड़, सरबजीत सिंह, राजू धवन, बलविंद्र कौर, सीमा, मैना, गुरदेव कौर, मीना, मोनिका आदि गणमान्यजन मौजूद थे।

इस अवसर पर सभी गणमान्यजनों को तृप्ता वैल्फेयर सोसायटी की अध्यक्ष तृप्ता चिटकारा ने सिरोपा पहनाकर उनका अभिनंदन किया। कार्यक्रम में सभी ने इस बात के लिए स्वयं को सौभाग्यशाली माना कि सिरसा में गुरुनानक देव महाराज ने अपने चरण रखे। सभी ने तृप्ता वैल्फेयर सोसायटी की ओर से किए गए कार्यक्रम की जमकर सराहना की। उल्लेखनीय है कि तृप्ता चिटकारा पिछले करीब 19 सालों से सामाजिक व धार्मिक कार्यक्रमों में प्रमुख भूमिका में रहती हैं।

जांच को प्रभावित करने का प्रयास जारी : सैनी

शिवपुरी में गड़बड़ी को लेकर धरना 12वें दिन भी रहा जारी

- छोटे अधिकारी अपने सीनियर की जांच कैसे करेंगे : सुशील

हरिभूमि न्यूज ⏭|चोपटा

सिरसा। नगरपरिषद में व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ धरने पर बैठे पूर्व पार्षद व शहरवासी। फोटो : हरिभूमि

पूर्व नगरपार्षद सुशील सैनी ने सिरसा के भाजपा नेता पर आरोप लगाया कि नगर परिषद के घोटालों में उसका सीधा हाथ है। नगरपरिषद में तत्कालीन चेयरपर्सन पर दबाव बनाकर करोड़ों रुपए का हेरफेर किया गया। उन्होंने दावा किया कि उनके पास भ्रष्टाचार के पुख्ता सबूत मौजूद हैं।

शिवपुरी के गेट पर धरने के 12वें दिन लोगों को संबोधित करते हुए सुशील सैनी ने कहा कि प्रशासन ने डीएमसी की जांच के लिए छोटे अधिकारियों की ड्यूटी लगाई है। छोटे अधिकारी अपने सीनियर अधिकारी की जांच कैसे कर सकेंगे। केवल जांच को प्रभावित करने के लिए ऐसा किया जा रहा है ताकि मामले को रफा दफा किया जा सके लेकिन वे ऐसा नहीं होने देंगे।

उन्होंने कहा कि अगर प्रशासन ने व्यापक और सही जांच न करवाई तो वे हाईकोर्ट जाएंगे और उपायुक्त को भी पार्टी बनाएंगे। उन्होंने कहा कि इस पूरे घोटाले की जांच जिम्मेदार अधिकारी से करवाई जानी चाहिए अन्यथा उनका आंदोलन इसी तरह जारी रहेगा। प्रशासन का नगरपरिषद के गेट पर पुतला फूंका जाएगा और शवयात्रा निकाली जाएगी। सुशील सैनी ने आरोप लगाया कि कथित भाजपा नेता ने नगरपरिषद के अधिकारियों से मिलीभगत करके डबवाली रोड पर ट्रस्ट बनाकर जमीन पर कब्जा किया और उसके निर्माण के लिए 40 लाख रुपए नगरपरिषद द्वारा भुगतान किया गया।

सांसद सैलजा ने लिया बाबा श्याम का आशीर्वाद

सिरसा। सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने प्राचीन श्री श्याम मंदिर में बाबा श्याम की पूजा-अर्चना की और बाबा श्याम का आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर पंडित प्रिंस शर्मा और तेजपाल शर्मा ने सांसद कुमारी सैलजा और कांग्रेस नेताओं को बाबा श्याम के पटके पहनाए। इसके बाद मंदिर के संरक्षक और पुजारी डॉ. चांद रतन शर्मा के निधन पर उनकी आत्मा की शांति के लिए विशेष पूजा की गई। सांसद सैलजा ने दिवंगत पुजारी के परिजनों से मुलाकात कर शोक जताया। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को शांति और परिवार को दुख सहने की शक्ति मिले। इस मौके पर उनके साथ कांग्रेस नेता वीरभान मेहता, राजकुमार शर्मा, नवीन केडिया, प्रेम शर्मा, भूपेंद्र राठौड़, मोहित शर्मा, अंकित चाड़ीवाल, धर्मपाल खोखर, सतपाल मेहता और मनीष सोनी मौजूद रहे।

शहीद उधम सिंह मार्केट को कूड़े का डंप प्वाइंट बनाने से निजात दिलाने की मांग

- मेयर प्रवीण पोपली से मिले एसोसिएशन के पदाधिकारी

हरिभूमि न्यूज ⏭|हिसार

हिसार। नगर निगम मेयर प्रवीण पोपली के समक्ष मार्केट की समस्याएं रखते हुए मार्केट एसोसिएशन के पदाधिकारी।

शहीद उधम सिंह व शहीद मदन लाल ढींगडा मार्केट एसोसिएशन के प्रधान प्रवीण हिन्दू के प्रतिनिधित्व में राकेश ठकराल, अनिल जैन, दर्शन खुराना, नागेंद्र दलाल व जितेन्द्र सोनी आदि मार्केट के पैंडिंग कार्यों को लेकर मेयर प्रवीण पोपली से मिले और उन्हें समस्याओं संबंधी लिखित पत्र सौंपा। मेयर पोपली ने नगर निगम ज्वाइंट कमिश्नर डॉ. प्रीतपाल को बुलाकर मार्केट की समस्याओं को दूर करने के निर्देश दिए। एसोसिएशन की मुख्य मांगों में खाली मल्टीप्लेक्स प्लाट में कई मार्केटों का कूड़ा निगम सफाई कर्मचारीयों द्वारा जमाकर मार्केट के बीच बनाए गए डंपिंग प्वाइंट को यहां से हटाने व मार्केट में जो सफाई एक सप्ताह में सिर्फ एक बार होती है इसे प्रतिदिन सुचारू किया करने, मार्केट के फुटपाथ को बनाने संबंधी मांगें शामिल थीं। प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने कहा कि ग्रीन स्क्वेयर मार्केट शहर के मध्य स्थित मुख्य मार्केट है व टीम स्वच्छता अभियान व मार्केट एसोसिएशन के सदस्यों ने मिलकर इस मार्केट को एकदम स्वच्छ मार्केट बनाया हुआ था, लेकिन नगर निगम की लापरवाही से मार्केट को डंपिंग प्वाइंट बनाकर इसकी स्वच्छता को खराब कर दिया गया है।

सिरसा। समाजसेवी ललित जैन को सम्मानित करते गौशाला कमेटी।

श्री कृष्ण गोशाला कमेटी ने ललित जैन को नवाजा

ओढां। गांव बप्पां स्थित श्री कृष्ण गोशाला में गोशाला कमेटी व ग्रामीणों द्वारा आयोजित कार्यक्रम में जयदेव-सहदेव जैन चेरिटेबल ट्रस्ट के प्रधान व समाजसेवी ललित जैन व नरसिंह दास बंसल ने शिरकत की। सर्वप्रथम उन्होंने गोशाला परिसर का निरीक्षण किया। गोशाला कमेटी द्वारा गोवंश के लिए की गई व्यवस्थाओं व साफ-सफाई को देखकर उन्होंने गोशाला प्रधान व सदस्यों की प्रशंसा की। उन्होंने ट्रस्ट की ओर से 2 लाख रूपए की सहयोग राशि गौशाला कमेटी को भेंट की। गोशाला कमेटी प्रधान रमेश बिजलानी ने ललित जैन व नरसिंह बंसल को शॉल ओढ़ाकर व मोमेंटो देकर सम्मानित किया व समाजसेवा के क्षेत्र में ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की। मेहर चंद ने आए हुए सभी सदस्यों का धन्यवाद किया। इस मौके पर ओमप्रकाश, बनवारी लाल, यशपाल, बंसी लाल, लक्ष्मण दास, रामकुमार, मंगत राम, रामस्वरूप, जोगिंद्र सिंह, प्रदीप शर्मा, डॉ. नंद लाल, लीलाधर व किशनदास चावला आदि मौजूद थे।

किसानों ने कालाबाजारी रोकने के लिए डीसी के नाम भेजा ज्ञापन

हिसार। किसान सभा ने खाद की कालाबाजारी रोकने के लिए सोसायटियों के माध्यम से किसानों को खाद उपलब्ध करवाने के लिए कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के उपनिदेशक डॉ. राजबीर सिंह के माध्यम से उपायुक्त को ज्ञापन भेजा है। किसान सभा के जिला प्रधान शमशेर सिंह नम्बरदार व तहसील प्रधान सूबेसिंह बूरा के नेतृत्व में डीएपी व यूरिया खाद सोसायटियों के माध्यम से किसानों को मिले व कालाबाजारी पर रोक लगाने के लिए गांव लाडवा, कैमरी, मिरकां, डाया, स्याहड़वा, भर्री आदि के सैंकड़ों किसानों ने कृषि अधिकारी को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में कहा गया है कि सोसायटियों के माध्यम से ही खाद उपलब्ध करवाई जाये जिससे किसान व्यापारियों की भारी लूट से बच सकें। इस लूट को किसान कतई बर्दाश्त नहीं करेंगे। अगर यह कालाबाजारी नहीं रोकी गई तो किसान सभा आंदोलन करेगी।

अखिल भारतवर्षीय श्री गुर्जर गौड़ ब्राह्मण महासभा की कार्यकारिणी का स्वागत

- अधिक से अधिक लोगों को महासभा से जोड़ें : जोशी

हरिभूमि न्यूज ⏭|सिरसा

जनसंपर्क अभियान के तहत श्रीगंगानगर जा रहे राष्ट्रीय अध्यक्ष ओमप्रकाश जोशी, प्रधानमंत्री प्रद्युम्न जोशी एवं अखिल भारतवर्षीय श्री गुर्जरगौड़ ब्राह्मण युवक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल जोशी, बलजीत जाजड़ा, बसंत पिरगावत, पूर्व अध्यक्ष रामचंद्र मताणा के हरियाणा आगमन पर अखिल भारतवर्षीय श्री गुर्जर गौड़ ब्राह्मण महासभा व श्री ब्राह्मण महासभा द्वारा दिल्ली पुल पर जोरदार स्वागत किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ओमप्रकाश जोशी ने कार्यकारी अध्यक्ष विजय जोशी से कहा कि आपको राष्ट्रीय स्तर की कार्यकारिणी में काम करना है। अधिक से अधिक लोगों को महासभा से जोड़ें, ताकि संगठन को मजबूती प्रदान की जा सके। महर्षि गौतम आश्रम के विषय में भी राष्ट्रीय अध्यक्ष से चर्चा की गई। कार्यकारी अध्यक्ष विजय जोशी ने राष्ट्रीय अध्यक्ष व अनिल जोशी को मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण दिया, जिस पर उन्होंने कहा कि जब आश्रम में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा होगी तो वे अवश्य आएंगे।

ये रह मौजूद

इस अवसर पर हिसार से मुख्य समाजसेवी विनोद जोशी, प्रदेशाध्यक्ष इंद्र पाईवाल, युवा अध्यक्ष प्रदीप शर्मा जोधकां, उपाध्यक्ष प्रदीप शर्मा जोधकां, जगदीश जोशी, मोहित जोशी, सुरेश दड़बा, महासभा अध्यक्ष सुशील शर्मा, राहुल शर्मा, युवा अध्यक्ष नितिश शर्मा, पृथ्वी जोशी, बोबी चिंडालिया, मोंटी, मुकेश जोशी, हितेश जोशी, सुधीर सारस्वत, मदनलाल, राजकुमार चोटिया सहित समाज के गणमान्य उपस्थित थे।

शिविर जयपुर सम्भाग के प्रयोगशाला परिचारकों का तीन दिवसीय ओरियन्टेशन कोर्स सम्पन्न

कई तरह की बीमारियों के खतरे को कम करने में मदद करता है अनुलोम-विलोम : मदन गोपाल

- योग एक ऐसी क्रिया जो मानसिक व शारीरिक तौर पर रखती स्वस्थ

हरिभूमि न्यूज ⏭|फतेहाबाद

फतेहाबाद। जेएनवी में योग क्रियाओं का अभ्यास करवाते मदन गोपाल आर्य। फोटो : हरिभूमि

योग शरीर के सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद है। नियमित योगाभ्यास से कई बीमारियों से शरीर का बचाव किया जा सकता है। यह बात पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के योगाचार्य मदन गोपाल आर्य ने जवाहर नवोदय विद्यालय खाराखेड़ी में आयोजित नवोदय विद्यालय समिति जयपुर सम्भाग के प्रयोगशाला परिचारकों के तीन दिवसीय ओरियन्टेशन कोर्स में योग शिविर के समापन सत्र में अनुलोम विलोम प्राणायाम का महत्व बताते हुए कही।

उन्होंने बताया कि वैसे तो योग के अन्तर्गत कई तरह की क्रियाएं है जोकि अलग अलग शारीरिक और मानसिक समस्याओं में लाभदायक होती हैं, लेकिन एक योगिक क्रिया ऐसी हैं जो मानसिक तौर पर तो हमें स्वस्थ रखती ही हैं, साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाती हैं। इन्हीं योगिक क्रियाओं में शामिल है अनुलोम-विलोम। अनुलोम विलोम का अभ्यास शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करने के साथ साथ कई तरह की बीमारियों के खतरे को कम करने में मदद करता है। अनुलोम विलोम पर हुए अनुसन्धानों से पता चला है कि इस प्राणायाम का नियमित अभ्यास करने से कई गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं जैसे हृदय रोग,उच्च रक्तचाप, गठिया, को दूर करता है।

इसके साथ आर्य ने घृतपान, दुग्धपान, नस्य, शिरोपिच्छू, जल नेति, रबड़ नेति, रबड़ दंड, वमन, विरेचन, वस्ती, रक्तमोक्षण, अभ्यंग (मसाज), पादस्नान, कटिस्नान तथा मेथी कलौंजी, जीरा, धनिया, अजवायन, मुलेठी आदि के पानी व सहजन, कढीपत्ता, पीपल, नीम, बबूल, बैल पत्र, जामुन, शीशम, गिलोय के पत्ते खाने के लाभ बताए। पतंजलि योग समिति फतेहाबाद के योग शिक्षक सहदेव भाखर ने जौगिग यौगिक क्रियाएं करवाई। इस दौरान आज सभी उपस्थित जनों ने अपने विद्यालयों व क्षेत्र में योग के प्रचार प्रसार का संकल्प भी लिया।

खबर संक्षेप

लुदेसर में करंट लगने से युवक की मौत

चोपटा। नाथूसरी चोपटा क्षेत्र के गांव लुदेसर में करंट लगने से 20 वर्षीय युवक मौत हो गई। युवक की पहचान गांव लुदेसर निवासी अजय कुमार गाट के रूप में हुई। जानकारी अनुसार अजय कुमार (20) पुत्र अशोक कुमार निवासी गांव लुदेसर शुक्रवार की शाम को

अपने घर में किसी काम में लगा हुआ था। इस दौरान अचानक मशीन में बिजली की तार से करंट लग गया। इससे वह बूरी तरह से घायल हो गया। इसके बाद घायल अजय कुमार को परिजनों ने डेरा सच्चा सौदा स्थित अस्पताल में लेकर गए। जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। गांव में जैसे ही अजय कुमार की मौत के बारे में ग्रामीणों को पता चला गांव में मातम छा गया। मृतक के भाई विजय कुमार के बयान पर नाथुसरी चोपटा थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर इतेफाकिया मौत की कार्रवाई की है।

टोहाना में घर में मिली मां-बेटी की लाश, कैंसर से पीड़ित थी महिला, मोहल्ले में मचा हड़कंप

हरिभूमि न्यूज ▶▶| टोहाना

खास बातें

- मृतक महिला की पहचान 90 वर्षीय सुरजीत कौर व उनकी पुत्री हरभजन कौर के रूप में हुई
- सुरजीत कौर अपनी बेटी हरभजन कौर के साथ पिछले करीब 60 सालों से इसी मकान में रह रही थी, बेटे की कुछ देने पहले हो गई थी मौत

शहर के लाला छज्जू राम पहाडिय़ा ट्रस्ट के कार्यालय रोड पर एक घर में मां-बेटी की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत होने का मामला सामने आया है। मां-बेटी का शव मिलने की जानकारी मिलते ही मोहल्ले में भी हडकंप मच गया और काफी संख्या में लोग महिला के घर के बाहर इकट्ठा हो गए। इस बारे सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और शनिवार सुबह दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए नागरिक अस्पताल भिजवा दिया है। शहर पुलिस की प्राथमिक जांच के अनुसार दोनों महिलाओं की प्राकृतिक तरीके से बीमार होने के कारण मौत हुई है, किसी भी शव पर कोई चोट या किसी जानवर के काटने के निशान नहीं है। दोनों को नागरिक अस्पताल की शवगृह में पहुंचा दिया है। मृतक महिला की पहचान 90 वर्षीय सुरजीत कौर व उसकी पुत्री हरभजन कौर के तौर पर हुई है, जो 55 साल की थी। मिली जानकारी के अनुसार सुरजीत कौर अपनी बेटी हरभजन कौर के साथ पिछले करीब 60 सालों से इसी मकान में रह रही थी। दोनों मां-बेटी की आर्थिक हालत भी सही नहीं बताई जा रही। आसपड़ोस के लोगों ने बताया कि सुरजीत कौर की बेटी पिछले लंबे समय से कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से जूझ रही थी। उसके भाई बिल्लू की भी कुछ दिन पहले मौत हो चुकी है। इसके बाद से दोनों मां-बेटी काफी उदास थी। मौहल्लावासी एवं समाजसेवी राजेंद्र बली ने बताया कि शनिवार सुबह उन्हें सूचना मिली किउनके कार्यालय के साथ लगते मकान में दो महिलाओं के शव मिले हैं। सूचना मिलते ही वह मौके पर पहुंचे और मां-बेटी को मृत अवस्था में पाया। इसके बाद उन्होंने इस बारे पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही शहर थाने से पुलिस टीम मौके पर पहुंची और मां-बेटी के शव कब्जे में लेकर उन्हें पोस्टमार्टम के लिए नागरिक अस्पताल भिजवा दिया है। मौके पर पहुंचे एडिशनल थाना प्रभारी पीएसआई उमेद सिंह ने बताया कि प्राथमिक दृष्टि में दोनों महिलाओं की मौत का कारण बीमारी से होना लग रहा है। मौत के असली कारणों का पता पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही चल पाएगा। उन्होंने बताया कि दोनों शवों पर कोई चोट के निशान भी नहीं है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जोनल स्तरीय निरंकारी बाल समागम आज

डबवाली। संत निरंकारी मिशन की ओर से आगामी 29 जून को डबवाली के संत निरंकारी सत्संग भवन में जोन नंबर-9 टोहाना का एक विशाल जोनल स्तरीय निरंकारी बाल समागम आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर लंगर भंडारा भी लगाया जाएगा। टोहाना जोन के जोनल इंचार्ज रमन नागपाल ने बताया कि इस आध्यात्मिक कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रचारक, मेरठ आशीष गौतम करेंगे। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम में जोन नंबर 9 से सिरसा, जींद व फतेहाबाद जिले से श्रद्धालु यहां पहुंचेंगे।

राधा नाम कीर्तन से भक्तों ने बांधा समां

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

फतेहाबाद। राधा नाम कीर्तन में कलाकार भारत टुटेजा को सम्मानित करते श्रद्धालु।

बिघड़ रोड पर गुरूकृपा मंडल द्वारा राधान नाम कीर्तन बड़ी धूमधाम से आयोजित किया गया। मदान परिवार के निवास स्थान पर आयोजित कार्यक्रम में ज्योति प्रचंड करके माता रानी का भव्य स्वागत किया किया। उसके बाद टी सीरिज कलाकार भारत टुटेजा ने गणेश वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उसके बाद ममता तनेजा ने 'तेरी कृपा ही मेरा सब कुछ है, मेरे सतगुरु प्यारे, बिन पिए नशा हो जाता है' भजन गाकर माहौल को रसमयी बना दिया। उसके बाद श्याम प्रेमी साक्षी सरदाना ने 'श्याम बाबा का दरबार मैंने भावे' आदि भजनों से श्याम बाबा की महिमा का गुणगान किया। उसके बाद भारत टुटेजा ने माता रानी की सुंदर सुंदर भजनों के साथ 'तू आजा माँ बड़े चिर तो लगी है आस दर्शन दी, अज नी यो नाचना ते फिर कदो नाचना, रंगना नी में तन मन रंगना' आदि भजन गा कर सभी को नाचने पर मजबूर कर दिया। इस मौके पर दास करण रसिया, भारत मेहता, राहुल मदान, पायल, किरण नागपाल, रजत मेहता, अलका, मीनू, तनु सभी शामिल थे। माता रानी का दरबार देखने योग्य था। माता रानी की भव्य आरती की उसके बाद लंगर प्रसाद वितरित किया। मदान परिवार ने गुरुकृपा मंडल के सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया और भारत टुटेजा को सम्मानित किया गया।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने ऑटो मार्केट में चलाया पौधरोपण अभियान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

फतेहाबाद। ऑटो मार्किट में पौधारोपण करते भाजपा नेता। **फोटो :हरिभूमि**

भाजपा नेताओं व कार्यकर्ताओं ने शनिवार को जिलाध्यक्ष एडवोकेट प्रवीण जोड़ा के नेतृत्व में ऑटो मार्केट में पौधा रोपण अभियान चलाया। इस अवसर बीजेपी कार्यकर्ताओं ने यहां अनेक फलदार एवं छायादार पौधे लगाए तथा इनकी देखभाल का संकल्प भी लिया। ऑटो मार्केट एसोसिएशन के पदाधिकारियों व सदस्यों ने भाजपा नेताओं का स्वागत किया और इस अभियान की सराहना करते हुए कहा कि वह इन पौधों की पूरी देखभाल करने में अपना योगदान देंगे।बीजेपी जिलाध्यक्ष प्रवीण जोड़ा ने कहा कि हर साल गर्मी अपना प्रचण्ड रूप दिखाती है। इसका मूल कारण प्रकृति के साथ छेड़छाड़ और पेड़ पौधों की कमी है। इसलिए मानव जाति का कर्तव्य बनता है कि पृथ्वी और पर्यावरण को बचाने के लिए अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगाएं तथा हमारी धरती फिर से हरी भरी बन सके। आज प्रदूषण के कारण पर्यावरण दूषित हो रहा है, जबकि पेड़ पौधे प्रदूषण को कम करने और शुद्ध वायु देने में सहायक होते हैं।

बद्रीनाथ हादसे में शिल्पा की मौत पर दिग्विजय चौटाला ने जताया शोक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

फतेहाबाद। शिल्पा की मौत पर उनके घर जाकर शोक जताते दिग्विजय चौटाला।

जननायक जनता पार्टी के युवा नेता दिग्विजय सिंह चौटाला ने हाल ही में उत्तराखंड के बद्रीनाथ में हुए दर्दनाक हादसे में जान गंवाने वाली फतेहाबाद निवासी महिला शिल्पा पत्नी अंकित गर्ग के घर पहुंचकर शोक व्यक्त किया। उन्होंने शिल्पा के परिजनों से मुलाकात कर इस दुखद समय में संवेदना प्रकट की और परिवार को हौसला बनाए रखने की अपील की। गौरतलब है कि यह हादसा बद्रीनाथ-जोशीमठ राष्ट्रीय राजमार्ग पर पातालगंगा के पास हुआ, जब भूस्खलन के दौरान एक बड़ा पत्थर शिल्पा की कार पर आ गिरा। हादसे में 36 वर्षीय शिल्पा की मौके पर ही मृत्यु हो गई, जबकि उनके पति अंकित गर्ग और 10 वर्षीय बेटी ख्वाहिश गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों को तत्काल नजदीकी अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया है, जहां उनकी स्थिति अब स्थिर बताई जा रही है। दिग्विजय चौटाला ने परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि यह हादसा बेहद पीड़ादायक और दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि पार्टी और वे स्वयं इस संकट की घड़ी में परिवार के साथ खड़े हैं। इस मौके पर उनके जजपा जिलाध्यक्ष रविन्द्र बेनिवाल, कुलजीत कुलडिया, कुलदीप सिगड़, अजय संधू, सुभाष गोरछिया व अन्य मौजूद रहे।

बिजली के बढ़े रेट वापस न लेने पर करेंगे आंदोलन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

कबीर कुटिया से नहीं, सेक्टर 7 के अधिकारियों द्वारा चलाई जा रही सरकार : दिग्विजय चौटाला

फतेहाबाद। पत्रकारों से बातचीत करते दिग्विजय चौटाला, साथ हैं कुलजीत कुलडिया।

जननायक जनता पार्टी के युवा विंग के प्रदेशध्यक्ष दिग्विजय सिंह चौटाला ने हरियाणा सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि सरकार ने बिजली के बढ़े हुए रेट वापिस नहीं लिए तो जजपा प्रदेश में एक बड़ा आंदोलन करेगी। वह शनिवार को फतेहाबाद में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। दिग्विजय चौटाला ने कहा कि बिजली के बेतहाशा रेट बढ़ाकर सरकार ने आम आदमी से लेकर व्यापारी तक की जेब पर डाका डाला है। सरकार ने रेट तो बढ़ाया ही साथ ही में 50 रुपये किलोवाट का फिक्स चार्ज अतिरिक्त लगा दिया है। उन्होंने कहा कि बीजेपी को लगातार तीसरी बार सत्ता में आने का अहंकार हो गया है, इसलिए लगातार नए नए टैक्स लगाए जा रहे है। युवा जजपा नेता ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री का ब्यूरोक्रेसी पर कोई नियंत्रण नहीं रहा। प्रदेश की कानून व्यवस्था बदहाल है। प्रतिदिन औसतन तीन मर्डर हो रहे हैं। यह दिशाहीन सरकार है। दिग्विजय सिंह ने कहा कि पहले सरकार कह रही थी कि कौशल रोजगार के तहत लगे कर्मचारियों को पक्का किया जाएगा, अब शिक्षा मंत्री कह रहे है कि हमने ऐसा कोई वादा नहीं किया। सरकार 6 साल में सीईटी कंडक्ट नहीं करवा पाई। अब डेट निकाली है तो पहले फर्जी पोर्टल सामने आ गया और असली पोर्टल पर आवेदन जमा ही नहीं हो पाए। उन्होंने कहा कि सरकार कबीर कुटीर की बजाय सैक्टर-7 के अधिकारियों द्वारा चलाई जा रही है।

...राजनीति में अगर-मगर नहीं होगा

इनेलो-जेजेपी के साथ आने पर कहा : राजनीति अगर मगर की गेम नहीं

इनेलो-जेजेपी के भविष्य में साथ आने के सवाल पर कहा कि राजनीति अगर मगर की गेम नहीं है, भविष्य का जवाब आज नहीं दिया जा सकता, जो चीज मेरे दायरे में नहीं है, उसका जवाब मैं नहीं दे सकता। मैं सकारात्मक सोच रखता हूं। जब परिवार टूटता है या कोई चीज टूटती है तो उसका नुकसान होता है। मैं तोडने में नहीं जोडने की सोच रखता हूं। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में छात्रों के आंदोलन का समर्थन करते हुए दिग्विजय सिंह ने कहा कि वह अहंकारी सरकार के विरूद्ध छात्रों के साथ मिलकर लंबा संघर्ष करने को तैयार है। विश्वविद्यालय के कुलपति के जाने के कुछ दिन शेष बचे है।

जजपा के अचानक डाऊन फाल के सवाल पर दिग्विजय सिंह ने कहा कि हालात और परिस्थितयां सदा एक समान नहीं रहती लेकिन प्रदेश की जनता को समझ आ गया है कि कांग्रेस न तो सरकार बना सकती है और नही विपक्ष की भूमिका अदा कर सकती है।

भिरड़ाना मंडल अध्यक्ष संदीप कुमार बने ग्रीवेंस समिति सदस्य, पार्टी हाईकमान का जताया आभार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| फतेहाबाद

- बोले-प्रदेश सरकार हर वर्ग के उत्थान के लिए कार्य कर रही

भाजपा भिरड़ाना मण्डल अध्यक्ष एवं युवा समाजसेवी संदीप कुमार भोडिय़ाखेड़ा को प्रदेश सरकार जिला जन सम्पर्क एवं कष्ट निवारण समिति फतेहाबाद का सदस्य मनोनीत किया गया है। संदीप कुमार को मिली इस अहम जिम्मेवारी से बीजेपी कार्यकर्ताओं में खुशी का माहौल है। संदीप कुमार ने जिला जन सम्पर्क एवं कष्ट निवारण समिति का सदस्य बनाए जाने पर प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली, राज्यसभा सांसद सुभाष बराला, पूर्व सांसद सुनीला दुग्गल, पूर्व विधायक दुड़ाराम, जिलाध्यक्ष एडवोकेट प्रवीण जोड़ा सहित सभी वरिष्ठ नेताओं का आभार जताया है। उन्होंने कहा कि समिति का सदस्य के तौर पर उनका प्रयास रहेगा कि समिति के समक्ष अपनी समस्या लेकर आने वाले लोगों की समस्याओं का समिति अध्यक्ष एवं मंत्री श्रुति चौधरी से तुरंत करवाया जाए। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में हर वर्ग के उत्थान के लिए कार्य कर रही हैं। लोगों की समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर तुरंत समाधान किया जा रहा है।

विधायक का आश्वासन, ठेकेदार की मनमानी से गुस्साए सफाई कर्मचारी

सिरसा। डबवाली मं ठेकेदार के खिलाफ धरने पर बैठे सफाई कर्मचारी।

डबवाली। डबवाली म सफाई कर्मचारियों व डोर-टू-डोर कचरा उठाने वाले कर्मचारियों का धरना शनिवार को 20वें दिन में प्रवेश कर गया है। धरने के 20वें दिन इनेलो से डबवाली विधायक आदित्य चौटाला ने आश्वासन दिया कि वे उनकी मांगों को सरकार तक पहुंचाकर उन्हें इंसाफ दिलाएंगे। उन्होंने ईओ से बात भी कर ली थी।प्रधान अमित कुमार, उप प्रधान रविंद्र कुमार ने कहा कि विधायक के आश्वासन के बाद हमें लगा था कि आज धरना उठ जाएगा। विधायक आदित्य ने डोर-टू-डोर गाड़ी चालकों को ड्यूटी पर जाने के लिए कह दिया। बाद में जब हमने ठेकेदार विजय से बात की तो उसने विधायक की बातों को अनसुना करके हमें दो दिन का टाइम दे दिया। ठेकेदार की बातों से नहीं लगता कि वो कोई कार्रवाई कर्मचारियों के हित में करेगा। कर्मचारियों ने भी साफ शब्दों में कह दिया कि जब तक हमें कार्य पर नहीं लिया जाता, तब तक हमारा धरना जारी रहेगा। इस मौके पर प्रधान अमित कुमार, उप प्रधान रविंद्र कुमार व अन्य मौजूद रहे।

खंडहरनुमा मकान में ईंटों के नीचे छिपा रखी थी हेरोइन, पुलिस को देखकर भागे दोनों तस्कर

फतेहाबाद। अपराधियों की धरपकड़ के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत एएनसी स्टाफ फतेहाबाद ने गांव बीघड़ में 12 ग्राम हेरोइन बरामद की है। एएनसी स्टाफ फतेहाबाद के प्रभारी निरीक्षक प्रहलाद ने जानकारी देते हुए बताया कि पुलिस टीम एएसआई भूपेंद्र सिंह के नेतृत्व में गश्त कर रही थी। इस दौरान गांव बिघड़ में सूचना प्राप्त हुई कि वीरेंद्र सिंह उर्फ माडू पुत्र साधा सिंह एवं राजा सिंह पुत्र साधा सिंह निवासी गांव बिघड़, एक खाली पड़े खंडहरनुमा मकान में हेरोइन बेचने का कार्य कर रहे हैं। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने तुरंत मौके पर पहुंचकर मकान की तलाशी ली, जहां ईंटों के नीचे छुपाकर रखी गई 12 ग्राम हेरोइन बरामद की गई।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 8814999173, 9253681005

सुपरवाइजर सुशीला कंबोज ने कहा कि शिक्षा से ही विकास होगा

चोपटा के गांवों में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान चलाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चोपटा

सिरसा। जागरुकता शिविर के दौरान बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का संदेश देते हुए।

महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा चोपटा क्षेत्र के जमाल, ढुकड़ा, अरनियावाली, गिगोरानी, रामपुरा ढिल्लों में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत जागरूकता शिविरों का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य लिंगानुपात को बढ़ाने बारे लोगों को जागरूक करना है।

गांव जमाल में कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सुपरवाइजर सुशीला कंबोज ने बताया कि बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान का मुख्य उद्देश्य बेटियों के गिरते हुए अनुपात को बढ़ाना व लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त करना, बालिकाओं की सुरक्षा और संरक्षण के उपाय करना, बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करना और उनकी भागीदारी बढ़ाना है। बेटियों को भी बेटों के समान समझे। उन्हें भी भरपूर अवसर दें। इस दौरान आशा, नजीरा, उर्मिला, मंजू, लक्ष्मी,कैलाश, रोशनी और सुनीता सहित कई आंगनवाड़ी वर्कर, हेल्पर, आशा वर्कर और महिलाएं मौजूद रही।कार्यक्रम में गांव ढुकड़ा के सरपंच, मैंबर, आंगनवाड़ी वर्कर, सुपरवाइजर सुशीला कंबोज, सरपंच राजेंद्र कुमार, सरला, कमलेश, भागवती, रानी, सविता आंगनबाड़ी वर्कर, हैल्पर व समस्त आशा वर्कर मौजूद रहे। इस कार्यक्रम में ग्रामीणों को बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ की शपथ ग्रहण करवाई और बेटा बेटी एक समान के बारे में जागरूक किया। इसके अलावा गांव अरनिया वाली में सुपरवाइजर अनिता बैनीवाल के प्रतिनिधित्व में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ सही पोषण देश रोशन कार्यक्रम के तहत ग्रामीणों को जागरूक किया गया। गांव गिगोरानी और रामपुरा ढिल्लों में सुपरवाइजर अन्नू के नेतृत्व में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ चलाया गया।

स्पेशलः वर्ल्ड सोशल मीडिया डे
30 जून

तन-मन को कर रहा बीमार
सोशल मीडिया एडिक्शन

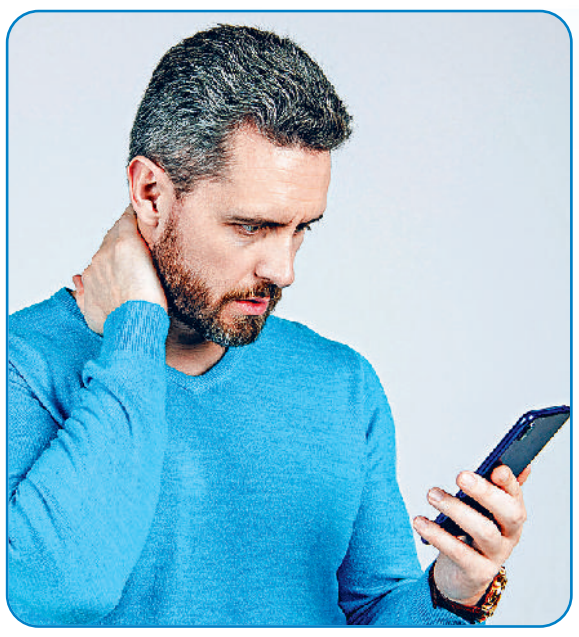

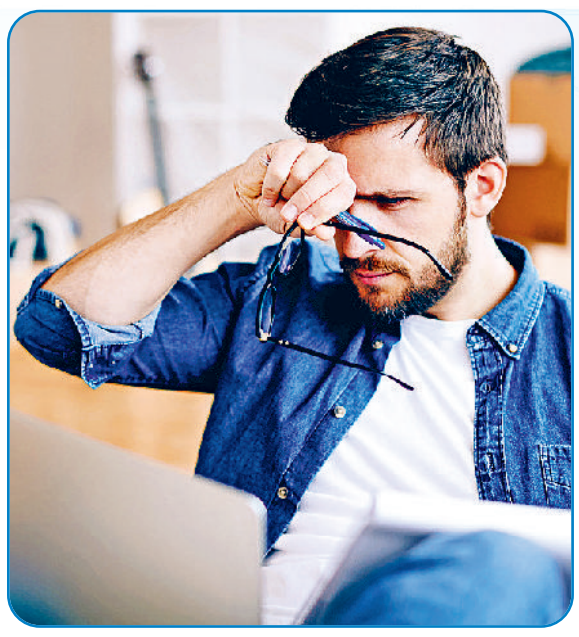

इन दिनों हर उम्र के लोग सोशल मीडिया के एडिक्शन में उलझे हुए हैं। इस एडिक्शन से घंटों गैजेट्स से चिपके रहने और गलत अंदाज में उसे ऑपरेट करने से कई तरह की फिजिकल प्रॉब्लम्स लोगों को अपनी गिरफ्त में ले रही हैं। यही नहीं इसकी लत लोगों को मानसिक रूप से भी बीमार बना रही है। वो कौन सी बीमारियां हैं और इनसे बचने के लिए क्या उपाय अपना सकते हैं, इस बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

कवर स्टोरी
डॉ. मोनिका शर्मा

आमतौर पर सोशल मीडिया एडिक्शन के नेगेटिव इफेक्ट्स को मानसिक सेहत से ही जोड़कर देखा जाता है। परिचित-अपरिचित लोगों की सुंदर तस्वीरों और अच्छी-बुरी सूचनाओं का मेल मन को नकारात्मक रूप से प्रभावित भी करता है। यहां ध्यान रखना जरूरी है कि सोशल मीडिया में हर तरह के कंटेंट को देखते रहना फिजिकल हेल्थ पर भी बुरा असर डालता है। शरीर के बहुत अंग स्क्रीन स्क्रॉलिंग को दिए जाने वाले समय के नेगेटिव असर को झेलते हैं।

स्किन-विजन पर दुष्प्रभाव

सोशल मीडिया अपडेट्स को देखने के लिए हरदम स्क्रीन में झांकते रहना, आंखों की रोशनी छीन रहा है। बच्चे-बड़े सभी की आईसाइट कमजोर हो रही है। आंखों में सूखापन, थकान और दूसरी समस्याएं बढ़ रही हैं। रात को सोते समय कम रोशनी में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को स्क्रॉल करना तो आंखों पर सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव डाल रहा है। वर्चुअल वर्ल्ड में पल-पल दिखती दूसरों की अपडेट्स इतनी इंटरेस्टिंग लगती हैं कि बिना ब्रेक स्मार्ट फोन की स्क्रीन में देखते रहने की लत लग जाती है। रिसर्च फर्म 'रेडसियर' के अनुसार हमारे यहां हर यूजर हर दिन औसतन 7.3 घंटे अपने स्मार्टफोन की स्क्रीन पर बिता रहा है। इसमें से ज्यादातर टाइम सोशल मीडिया पर बीत रहा है। इस डिजिटल व्यस्तता से सिरदर्द के साथ ही आंखों में तनाव एवं थकान भी बढ़ती है। मौजूदा समय में अधिकतर यूजर्स की आंखें यह डिजिटल स्ट्रेस झेल रही हैं। अंधेरे में भी स्क्रीन स्क्रॉल करने की आदत ना केवल तेजी से नजर कमजोर करती है बल्कि आंखों के नीचे डार्क सर्कल्स का भी कारण बनती है। इतना ही नहीं कई लोगों को स्मार्ट फोन से निकलने वाली ब्लू लाइट से चेहरे पर डार्क स्पॉट और पिगमेंटेशन की समस्या हो सकती है। असल में ब्लू लाइट त्वचा के रोम-रोम में समाते हुए स्किन में खुजली, रूखापन और टैनिंग की समस्या की भी वजह बनती है।

बिगड़ता बॉडी पोश्चर

पार्क में वॉक करते हुए, बिस्तर पर आराम करते हुए, गाड़ी चलाते हुए या जिम में एक्सरसाइज करते हुए। लोग हर समय स्मार्ट गैजेट्स की स्क्रीन खंगालते रहते हैं। इसका कारण सोशल मीडिया में मौजूदगी दर्ज करवाना ही है। असल दुनिया में अनुपस्थित होने से एक ओर उस समय की जा रही एक्टिविटी पर फोकस नहीं करते तो दूसरी ओर शरीर के विशेष अंगों पर अधिक दबाव भी पड़ता है। फोन की स्क्रीन में नीचे की तरफ देखते रहने से टेक नेक की समस्या बढ़ रही है। यह हेल्थ प्रॉब्लम गर्दन में दर्द, अकड़न और सिरदर्द से जुड़ी है। साथ ही स्क्रीन स्क्रॉलिंग बैक पेन और कंधों के दर्द से जुड़ी परेशानियों की भी वजह साबित हो रही है। आड़े-टेढ़े बॉडी पोश्चर में लोग घंटों सोशल मीडिया देखते रहते हैं। लगातार गलत शारीरिक स्थिति में बैठने से कई हड्डियों से जुड़ी समस्याएं पैदा हो रही हैं। सोशल मीडिया अपडेट्स देखते हुए लोग कुछ न कुछ लिखते भी हैं। गलत पोश्चर में टाइपिंग करने से 'टेक्स्ट नेक' की परेशानी बढ़ रही है। ध्यान रहे कि इंसानी शरीर पर अपने सिर का वजन 4.5 किलो से 5.4 किलो तक होता है। लेकिन फोन देखने के लिए गर्दन झुकाने पर ग्रैविटी के कारण सिर पर पड़ने वाला भार करीब 27 किलो तक हो जाता है। फोन को हरदम हाथ में थामे रहने से कलाई और स्क्रॉलिंग से अंगूठे में दर्द और नर्व्स में सुन्नपन की तकलीफ भी होने लगती है।

शारीरिक निष्क्रियता

हाल के वर्षों में सोशल मीडिया पर बीत रहे समय ने हर एजग्रुप के लोगों की फिजिकल एक्टिविटी कम कर दी है। इससे कम उम्र में ज्वॉइंट पेन और शरीर की जकड़न जैसी परेशानियां आ रही हैं। असल में हड्डियों के ज्वॉइंट्स में सूजन बढ़ना जकड़न और दर्द का अहम कारण होता है। फिजिकली एक्टिव ना रहना इस परेशानी को बढ़ाता है। बफेलो यूनिवर्सिटी की स्टडी के अनुसार सोशल मीडिया का हद से ज्यादा इस्तेमाल से सी-रिएक्टिव प्रोटीन का स्तर बढ़ सकता है। यह स्थिति ज्वॉइंट्स में सूजन बढ़ने से जुड़ी है। सी-रिएक्टिव प्रोटीन का स्तर बढ़ना शारीरिक अंगों में दर्द ही नहीं हृदय रोग और मधुमेह जैसी गंभीर हेल्थ इश्यूज की जड़ भी बन सकता है। देखने में आ रहा है कि पल-पल सामने आती रील्स, मीम्स देखते हुए गुजर रहा समय बेवजह की व्यस्तता का कारण बन गया है। इसके कारण लोगों में मोटापा भी बढ़ रहा है। शारीरिक छवि के मोर्चे पर सोशल मीडिया में दिखती तस्वीरों और वीडियोज के कारण बच्चों से लेकर बड़ों तक, अपने ही शरीर की बनावट के प्रति नापसंदगी की सोच भी आ रही है। ऐसे में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर बीत रहे समय को सीमित करना आवश्यक है। साथ ही समय-समय पर ब्रेक लेना और स्मार्ट गैजेट्स इस्तेमाल करते हुए बॉडी पोश्चर को सही रखना भी अहम है। *

बिगड़ रही मानसिक सेहत

सोशल मीडिया एडिक्शन का हमारी मेंटल हेल्थ पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे स्ट्रेस, डिप्रेशन, एंग्जाइटी और चिड़चिड़ेपन की समस्याएं लोगों में काफी बढ़ने लगी हैं। लोग घर में रहते हुए भी एक दूसरे से कम बात करते हैं। सोशल इंटरेक्शन कम होता जा रहा है। अपनी रियल लाइफ के बजाय वर्चुअल लाइफ को इंप्रेसिव बनाने के ज्यादा प्रयास किए जाते हैं। इससे स्ट्रेस का स्तर बढ़ता है। ऐसे में सोशल मीडिया का कंट्रोल्ड यूज करना मेंटल हेल्थ के लिए भी बहुत जरूरी है।

टेक्नोबिहेवियर
नौशाबा परवीन

सोशल मीडिया यूजर्स
एटिकेट्स का रखें ध्यान

लगभग दो दशक की अपनी विकास यात्रा में सोशल मीडिया ने समाज के बहुत बड़े वर्ग को प्रभावित किया है। लेकिन इसके पॉजिटिव यूज के साथ जमकर मिसयूज भी किया जाता है। इसके एटिकेट्स के बारे में न केवल आपको पता होना चाहिए, उसे फॉलो भी करना चाहिए।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि सोशल मीडिया ने लोगों के परिवार, दोस्तों और दुनिया के साथ बातचीत, संवाद और साझा करने के तरीकों को नए सिरे से परिभाषित किया है। हमारे जीवन में सोशल मीडिया के महत्व का अंदाजा दो मुख्य बातों से लगाया जा सकता है। एक, संकोची स्वभाव के जो लोग महफिलों में कुछ कह नहीं पाते थे, वह भी सोशल मीडिया पर खुलकर अपने विचार रखते हैं बल्कि अपनी हर बात कह लेते हैं, क्योंकि यह माध्यम 'पर्दे के पीछे' से भी अपने विचार (अच्छे या बुरे) व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। दूसरा यह कि सोशल मीडिया के जरिए राजनीतिक दलों से लेकर आम आदमी तक लोगों को इंफ्लुएंस (प्रभावित) करने का प्रयास करते हैं। इस वजह से इंफ्लुएंसर्स की एक नई जमात खड़ी हो गई है, विशेषकर इसलिए कि सोशल मीडिया, कंटेंट क्रिएटर्स को अच्छा पैसा कमाने का मौका भी देता है। इन महत्व के चलते मां दिवस, पिता दिवस आदि की तरह हर साल 30 जून को सोशल मीडिया दिवस भी मनाया जाने लगा है, जिसकी शुरुआत 2010 में मेंशेबल ने की थी।

ऐसे होता गया पॉपुलरः सोशल मीडिया के पॉपुलर होने का सिलसिला 2002 में फ्रेंडस्टर और 2003 में माईस्पेस के लांच होने से शुरू हुआ और इसके बाद 2004 में सोशल मीडिया के सबसे पॉपुलर प्लेटफॉर्म फेसबुक की स्थापना हुई। ट्विटर (जो अब एक्स हो गया है) ने हमें संक्षिप्त होने के लिए प्रोत्साहित किया कि 140 से कम अक्षरों में ही अपने विचार व्यक्त करने हैं। जिसे बाद में बढ़ाकर 280 कर दिया गया। इंस्टाग्राम और फ्लिकर ने ऐसी इमेजरी के जरिए खुद को व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया, जिसे हम संभाल सकते हैं। अगर वीडियो की बात करें तो टिक-टॉक और यू-ट्यूब मौजूद हैं। अभिव्यक्ति के लिए जब इतने मंच हों तो सोशल मीडिया दिवस मनाना आसान हो जाता है कि अपने पसंदीदा प्लेटफॉर्म पर कुछ पोस्ट किया जाए, मीम शेयर किए जाएं या किसी ऐसे व्यक्ति से जुड़ें जिससे लंबे समय से बात नहीं हुई है। अब तो अलग-अलग शहरों में सोशल मीडिया मीटिंग्स के जरिए भी इसकी पॉपुलैरिटी का जश्न मनाया जाता है।

होता है भरपूर मिसयूजः कोई चीज कितनी ही अच्छी क्यों न हो, उसका एक बुरा पहलू भी होता है। सोशल मीडिया भी इसका अपवाद नहीं है। अपने फॉलोवर्स बढ़ाने के उद्देश्य से अनेक कंटेंट क्रिएटर्स फेक न्यूज, क्लिक बेट (यानी वीडियो पर ऐसा थंब नेल लगाना, जिसका कंटेंट में जिक्र ही न हो) आदि का प्रयोग करते है। गलत धार्मिक या जातिगत आधारित कंटेंट से लोगों की भावनाओं को भी ठेस पहुंचाया जाता है। सोशल मीडिया पर झूठ बहुत बड़ा कारोबार है। इसे रोकने के लिए नियम और कानून अवश्य हैं, लेकिन इनका उल्लंघन भी काफी किया जाता है। साथ ही सरकारें और सामाजिक-राजनीतिक संगठन भी कंटेंट को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। अनेक कंटेंट क्रिएटर्स को जेल की हवा तक खानी पड़ी है। दुखद है कि महिलाओं को भी सोशल मीडिया के जरिए तरह-तरह से परेशान किया जाता है। कभी धमकी देकर, कभी ब्लैक मेलिंग, कभी धोखेबाजी में फंसाकर तो कभी उनके द्वारा पोस्ट किसी कंटेंट के लिए ट्रोलिंग के जरिए उन्हें प्रताड़ित करने का ट्रेंड काफी बढ़ गया है। चिंताजनक यह है कि कई बार तो कुछ लोग इतने असहनशील हो जाते हैं कि किसी कंटेंट के लिए हत्या करने जैसा जघन्य अपराध भी करने से नहीं कतराते। इक्कीसवीं सदी के ढाई दशक गुजरने और तकनीक के इतने विकसित दौर में समाज की ऐसी संकीर्ण सोच, विचारणीय है। सोशल मीडिया दिवस का जश्न मनाना तब ही अच्छा और सार्थक लगेगा, जब हम प्रण लें कि महिलाओं की ऑनलाइन ट्रोलिंग नहीं करेंगे और उनके विरुद्ध किसी भी तरह की हिंसा और अपराध का विरोध करेंगे।

ना भूलें ये एटिकेट्सः सोशल मीडिया का पॉजिटिव यूज करने के लिए उसे ऑपरेट करते समय इसके कुछ एटिकेट्स को याद रखा जाना चाहिए। जैसे- ऑनलाइन बातचीत करते समय अपनी रियल आइडेंटिटी में रहें। किसी से फ्रेंडशिप करने के लिए पहले उसके विचारों को कंटेंट को समझें, लाइक करें, कमेंट करें फिर दोस्ती की तरफ आगे बढ़ें। ऑनलाइन चैटिंग करते समय विनम्र और पेशेवर लहजे का प्रयोग करें। ऑनलाइन कंटेंट साझा करते समय मूल स्रोत की विश्वसनीयता को परख लें। *

कविता
हरीश कुमार 'अमित'

सब्र

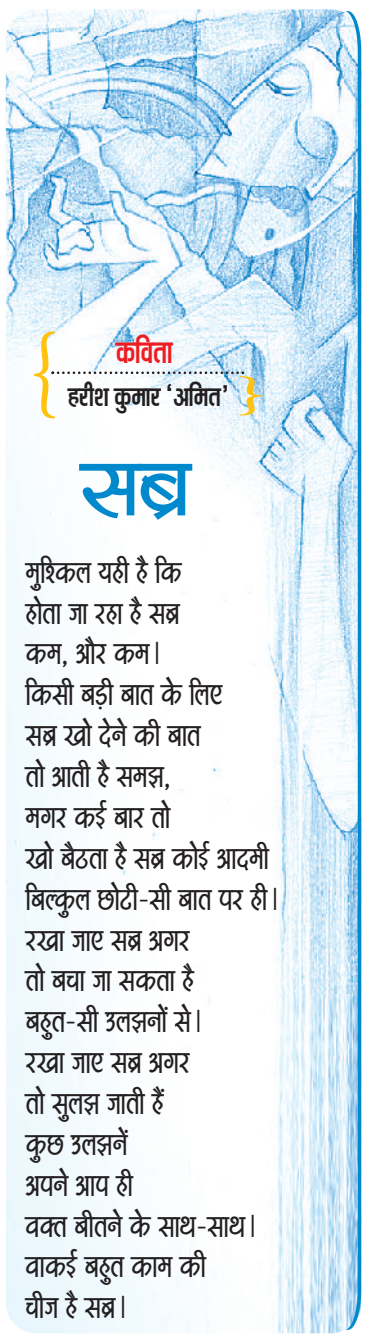

मुश्किल यही है कि
होता जा रहा है सब्र
कम, और कम।
किसी बड़ी बात के लिए
सब्र खो देने की बात
तो आती है समझ,
मगर कई बार तो
खो बैठता है सब्र कोई आदमी
बिल्कुल छोटी-सी बात पर ही।
रखा जाए सब्र अगर
तो बचा जा सकता है
बहुत-सी उलझनों से।
रखा जाए सब्र अगर
तो सुलझ जाती हैं
कुछ उलझनें
अपने आप ही
वक्त बीतने के साथ-साथ।
वाकई बहुत काम की
चीज है सब्र।

व्यंग्य / संदीप भटनागर

मुर्गे और खंजर

मुर्गों की किस्मत में मुर्गियां कम, खंजर ज्यादा होते हैं। ये खंजर कभी उनकी गर्दन पर होते हैं तो कभी पांव में बंधे। यह समझना आसान है कि दुनिया में पहले मुर्गा आया होगा फिर खंजर।

छुट्टी का दिन होने के नाते सामने वाले मैदान में चहल-पहल कुछ ज्यादा थी। बड़े से मैदान का एक कोना मुर्गेबाजों के लिए रिजर्व रहता है। सामान्य तौर पर यह जगह मुर्गा बाजार के रूप में जानी जाती है, जहां आम दिनों में मुर्गों की खरीद-फरोख्त होती है और छुट्टी के दिन खरीदे गए मुर्गों की जोर-आजमाइश।

लड़ने वाले मुर्गों की कीमत से कई गुना ज्यादा पैसे दांव पर लग जाते हैं।

मेरे लिए यह जानना रोचक था कि जिंदा रहते हुए लड़ते मुर्गे देश की जी.डी.पी. में कितना योगदान करते हैं? मुर्गा बाजार में खंजर बेचने वाला भी बैठता है। आम दिनों में उसके पास सामान्य खंजर होते हैं लेकिन मुर्गेबाजी वाले दिन उसके पास मुर्गों के पांव में बांधने वाले विशेष खंजर होते हैं। मुर्गों के मालिक से लेकर दांव लगाने वाले तक अपनी पसंद के मुर्गों के लिए एक से एक कातिल खंजर खरीदते हैं ताकि वो प्रतिद्वंद्वी मुर्गे को ज्यादा से ज्यादा चोटिल कर मुकाबला जीत सके।

जी-जान से लड़ने वाले मुर्गे यह नहीं जानते कि जिबह तो हारने वाले और जीतने वाले दोनों मुर्गों को होना ही है। किसी को आज तो किसी को कल। इस मुकाबले में लड़ाने वालों की अपनी साख और प्रतिष्ठा दांव पर लगी होती है और तमाशबीनों का पैसा, जबकि लड़ने वाले मुर्गों की अपनी जान दांव पर लगी होती है। पूरे तमाशे में खंजर बेचने वाले के खंजरों की मारक क्षमता भी दांव पर लगती है। जितना मारक खंजर उतनी ज्यादा डिमांड।

बावजूद इसके इस पूरे खेल में हमेशा खंजर बेचने वाला ही फायदे में रहता है। वह खंजर हारने वाले को भी बेचता है, जीतने वाले को भी बेचता है और दांव लगाने वालों को भी। मुर्गेबाजी का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता से भी पुराना है। इंसान ने अपने मनोरंजन के लिए मुर्गों को लड़ना सिखाया था। मानव सभ्यता के विकास के साथ मुर्गेबाजी के इस तरीके को क्रूर मानते हुए इसे असभ्य करार दे दिया गया। विकसित होती दुनिया में इसे अब नए ढंग से खेला जाने लगा। नवीन खेल में मुर्गों को मुर्गे होने का अहसास नहीं होने दिया जाता। लगातार उन्हें ऐसा महसूस कराया जाता है कि तुम्हारे अस्तित्व के लिए तुम्हें लड़ना जरूरी है। नवीन खेल में कमजोर मुर्गों पर भी दांव लगाया जाने लगा, जिन्हें विकसित भाषा में इन्वेस्टमेंट कहा जाने लगा। उनके माध्यम से आधुनिक खंजरों का परीक्षण कर दुनिया में दूसरे मुर्गों को बेचा जाने लगा। कुछ मुर्गों को अत्याधुनिक खंजरों से लैस कर इतना शक्तिशाली बना दिया गया कि वो अब अपने मालिक के इशारे पर लड़ने के बहाने तलाश कर किसी भी मुर्गे से लड़ने को तैयार रहते हैं।

खंजर के सौदागरों ने पूरी दुनिया को मुर्गेबाजी का अखाड़ा बना दिया। खेल में रोज हलाक होने वाले जानवर नहीं इंसान हैं इसलिए इस नए खेल पर दुनिया का कोई भी पशु क्रूरता अधिनियम लागू नहीं होता।

इस नए खेल में आज भी पुराने खेल के कुछ नियम लागू हैं। यह खेल अभी भी मालिकों की प्रतिष्ठा और ईगो के लिए खेला जा रहा है। इस खेल में आज भी खंजर के सौदागर नफे में हैं। वे कमजोर और शक्तिशाली दोनों मुर्गों को अपने खंजर बेच कर मुनाफा पीट रहे हैं। आज भी जिंदा लड़ते मुर्गे खंजर बनाने वाले मालिकों के देश की जी.डी.पी. को बढ़ा रहे हैं और जो मुर्गे लड़ नहीं रहे हैं, वो अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं। *

लघुकथा
अशोक वाधवाणी

दिव्यांग का सम्मान

आलोक किसी काम के सिलसिले में एक जान-पहचान वाले दंपती के घर पहुंचे। औपचारिक अभिवादन और चाय-पानी के बाद उनसे बातचीत में व्यस्त हो गए। इतने में छठी कक्षा में पढ़ने वाला उनका बेटा बाहर से घर के अंदर आया। वह सीधे ड्रॉइंग रूम में पहुंचा जहां आलोक उसके मम्मी-पापा के साथ बैठे थे। आते ही उसने अपनी मां के हाथ में दो सौ रुपए का नोट पकड़ाते हुए बोला, 'मम्मी, वो जो पड़ोस में अंधी खुशबू दीदी रहती हैं न, उन्होंने ये पैसे दिए हैं।'

किसी दिव्यांग के बारे में इस तरह के बोल सुनकर आलोक को बहुत बुरा लगा। उसने बच्चे को प्यार से समझाया, 'देखो बेटा, किसी की शारीरिक कमजोरी का ऐसे मजाक नहीं उड़ाते हैं। विकलांग लोगों को आजकल दिव्यांग कहकर पुकारा जाता है, यह एक पॉजिटिव सोच की निशानी है। संबोधन बदलने के बाद भी लोगों के व्यवहार में कोई सुधार नहीं हुआ है, जो गलत बात है। उसके माता-पिता ने बड़े चाव से अपनी बेटी का सुंदर सा नाम रखा होगा खुशबू! बेटा, तुम्हें हर किसी दिव्यांग का नाम पूरे मान-सम्मान के साथ लेना चाहिए। सिर्फ खुशबू दीदी भी तो कह सकते थे।'

'हमारे घर में सभी उन्हें अंधी खुशबू ही तो कहते हैं।' बच्चे ने बड़े भोलेपन से बताया।

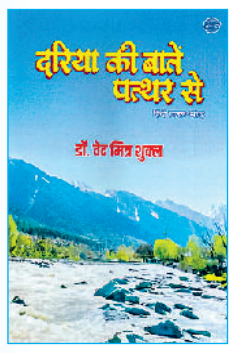

आलोक ने दंपती की ओर देखा, वे दोनों उससे नजरें नहीं मिला पा रहे थे। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

बहुरंगी गजलों का कोलाज

वेद मित्र शुक्ल दिल्ली विवि में अंग्रेजी पढ़ाते हैं लेकिन वे अंग्रेजी के साथ ही हिंदी साहित्य में रचनात्मक रूप से काफी सक्रिय हैं। इसका प्रमाण हैं, कई विधाओं में प्रकाशित उनकी मौलिक और संपादित ढेरों पुस्तकें। कुछ समय पहले उनका दूसरा गजल संग्रह 'दरिया की बातें पत्थर से' प्रकाशित हुआ है। इसमें उनकी गजलगोई के कई आयाम देखे जा सकते हैं। समय, समाज और जीवन के बेशुमार स्याह-श्वेत पहलू इन गजलों में उजागर हुए हैं। कहीं वे बढ़ते शहरीकरण के चलते बिखरते रिश्तों की टीस बयां करते हैं, *'गांवों से आ बसे शहर में खोए हैं सब रिश्ते नाते/गीतों में ही देवर-भाभी, जीजा-साली होली खेलें।'* तो कहीं समाज में छीजती जा रही मनुष्यता को लेकर वह अपनी चिंता ऐसे प्रकट करते हैं, *'तिल रखने की जगह नहीं पर/ अच्छे लोग बहुत ही कम हैं।'* इसी तरह वे राजनीतिज्ञों के चारित्रिक अवमूल्यन को बेबाकी से बयां करते हैं, *'गांधी का इक दौर रहा था/घिन आती है अब खद्दर से।'* यानी जीवन के लगभग हर पक्ष पर वे गहरी नजर रखते हैं और अपने जज्बातों को बयां करने के लिए सटीक तासीर के शब्दों को गजल में पिरो देते हैं।

कह सकते हैं यह किताब वेद मित्र शुक्ल की बहुरंगी गजलों के कोलाज जैसी है। *

पुस्तकः दरिया की बातें पत्थर से (गजल संग्रह)
लेखकः डॉ. वेद मित्र शुक्ल, **मूल्यः** 290 रुपए,
प्रकाशकः सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

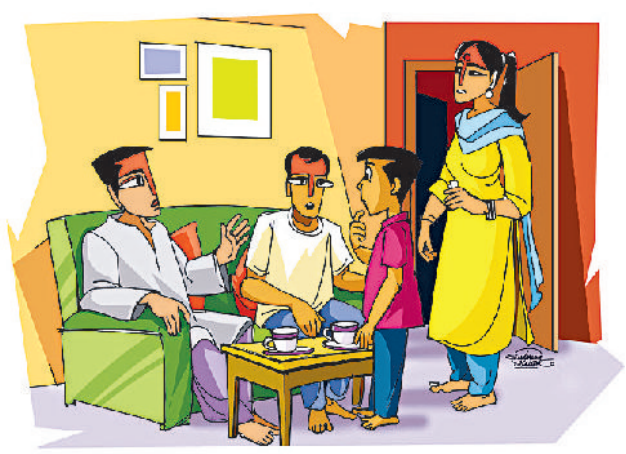

भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति का अनूठा केंद्र है अलाप्पुझा। बैकवार्टर्स पर्यटन, यहीं नहीं पूरे केरल की पहचान है। यहां का मोहक प्राकृतिक सौंदर्य, इसकी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विशिष्टता में चार चांद लगा देता है। यही वजह है कि मानसून में इस जगह का आनंद लेने के लिए दुनिया भर से पर्यटक आते हैं।

इस मानसून में घूम आएं भारत के वेनिस अलाप्पुझा

{ टूरिस्ट स्पॉट / लोकमित्र गौतम }

कोई शहर छोटा हो या बड़ा या चाहे कोई कस्बा ही क्यों न हो, हर शहर, हर महानगर और हर कस्बे की अपनी एक निजी पहचान, एक निजी विशेषता होती है, जो हर दूसरी जगह से अलग होती है। यही उस जगह की पहचान होती है, उसका लैंडमार्क कहलाता है। भारत के वेनिस कहे जाने वाले शहर अलाप्पुझा को 'बैकवाटर्स का स्वर्ग' कहा जाता है। यही यहां का लैंडमार्क माना जाता है।

घूमने के लिए बारिश है बेस्ट: भारत दुनिया के उन गिने-चुने देशों में से एक है, जहां हर मौसम के लिए विशिष्ट पर्यटन क्षेत्र को मुफीद माना जाता है। अगर भारत के पहाड़, गर्मियों में घूमने के लिए स्वर्ग हैं और भारत के समुद्रतट सर्दियों की गरमाइश भरी पसंदीदा जगहें हैं तो मानसून में घुमक्कड़ी का लुत्फ लेने के लिए केरल, पर्यटन का स्वर्ग कहा जाता है। लेकिन इस केरल में भी एक खास पर्यटन क्षेत्र है, अलेप्पी या अलाप्पुझा जिसे भारत के बैकवाटर्स का स्वर्ग कहा जाता है। इसे पूर्व का वेनिस भी कहते हैं। यहां के हाउसबोट (कुट्टनाड क्षेत्र में) पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं।

इसलिए अलाप्पुझा है विशिष्ट: केरल में यूं तो पूरे प्रदेश में ही बैकवाटर्स के अदभुत नजारे हैं- झीलें, नहरें, नदी तंत्र और तटीय लैगून ये सब मिलकर केरल को एक अद्भुत जल प्रदेश बनाते हैं। लेकिन केरल में भी जिस शहर को बैकवाटर्स स्वर्ग के नाम से जानते हैं, वो है- अलेप्पी या अलाप्पुझा। आज के अलाप्पुझा को अंग्रेजों के जमाने में अलेप्पी कहा जाता था। यह केरल के ऐतिहासिक नगरों में से एक है और इसे भारत के वेनिस होने का दर्जा हासिल है। अलेप्पी भारत के बैकवाटर्स का स्वर्ग माना जाता है। इसकी प्रसिद्धि यहां की सुंदर झीलों और जलमार्गों तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका एक गहरा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व भी है।

भौगोलिक स्थिति भी है अलग: अलेप्पी की भौगोलिक स्थिति भी इसे भारत का एक विशिष्ट शहर बनाती है। यह ऐतिहासिक शहर अरब सागर के किनारे स्थित है और इसके आस-पास की जमीन नदियों, नहरों, लैगून और झीलों से अटी पड़ी है। इस क्षेत्र को पहले कुट्टनाड के नाम से भी जाना जाता था, जो चावल की खेती और अपने जल परिवहन के लिए सदियों से प्रसिद्ध रहा है।

कम नहीं ऐतिहासिक महत्ता: प्राचीनकाल में यह क्षेत्र केरल के चेर साम्राज्य के अधीन था, तब यहां के राजा जलमार्गों को नियंत्रण करते थे, जो व्यापार के मुख्य साधन थे। दक्षिण भारत के अन्य भागों से मसालों, नारियल और अन्य उत्पादों का आदान-प्रदान इन्हीं जलमार्गों के जरिए होता था। लेकिन 18वीं और 19वीं शताब्दी में अलेप्पी एक प्रमुख बंदरगाह शहर के रूप में विकसित हुआ। जब केरल के प्रमुख बंदरगाह कोंडुगल्लरू में बाढ़ और भू-स्खलन के कारण व्यापार पूरी तरह से बाधित हुआ, तब तत्कालीन त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा और उनके उत्तराधिकारियों ने अलेप्पी को नया व्यापारिक केंद्र बनाने का निर्णय लिया। राजा मार्तंड वर्मा और उनके दीवान वेल्लुथंपी की इसमें निर्णायक भूमिका थी। उन्होंने यहां कृत्रिम नहरों और जलमार्गों का जाल बिछवाया ताकि नौकाओं और व्यापारिक जहाजों को यहां प्रवेश में सुविधा हो। यही वह समय था, जब अलेप्पी को भारत का वेनिस कहा जाने लगा। अलेप्पी धीरे-धीरे कपड़ों, मसालों, नारियल और चावल का प्रमुख निर्यातक केंद्र बन गया।

पहचान हैं अनोखी हाउसबोट्स: बैकवाटर्स यानी झीलों, नहरों और समुद्र से बने जलमार्ग, यही तो अलेप्पी की आत्मा है। यहां की प्रमुख झील वेंबनाड झील है, जो भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झीलों में से एक है। जब अलेप्पी का धीरे-धीरे बैकवाटर्स पर्यटन केंद्र के रूप में विकास होने लगा, तो यहां बड़े पैमाने पर पारंपरिक हाउसबोट, जिन्हें मलयालम भाषा में कैट्टुवल्लम कहा जाता है, विकसित होने लगे। ये कैट्टुवल्लम एक जमाने में बड़ा सा जहाज हुआ करता था, जिसने बाद में आधुनिक हाउसबोट का रूप ले लिया। आज अलेप्पी की पहचान इन्हीं हाउसबोट की वजह से है। अलेप्पी के ये हाउसबोट लकड़ी, नारियल की रस्सियों और केले के पेड़ों के पारंपरिक साधनों से बने होते हैं। इनमें अद्भुत स्थानीय कलाकारी को विभिन्न कलाकृतियों के रूप में देखा जा सकता है। अपनी इन्हीं खूबियों के कारण आज अलेप्पी भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लग्जरी पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित हुआ है।

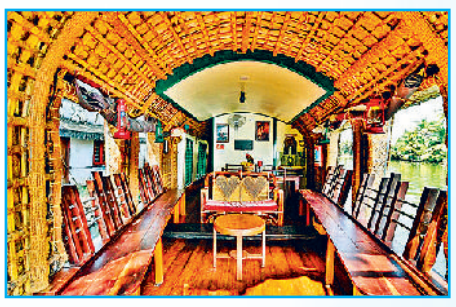

टूरिस्ट सेंटर के रूप में विकसित: सन 1990 के दशक में अलेप्पी को नए सिरे से एक बैकवाटर्स पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया गया। केरल की सरकार और यहां के स्थानीय लोगों ने पारंपरिक नावों को पर्यटकों के लिए हाउसबोट में बदला और आज अलेप्पी हाउसबोट टूरिज्म, आयुर्वेदिक स्पा, बर्ड वाचिंग और फिशिंग विलेज विजिट जैसी पर्यटन गतिविधियों के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है। अलेप्पी के बैकवाटर्स का अनुभव केवल एक सौंदर्य नहीं बल्कि स्थानीय जीवनशैली, भोजन, जल परिवहन और प्रकृति के संतुलन को महसूस कराने वाली संस्कृति है। इसीलिए अलेप्पी को केरल के बैकवाटर्स का स्वर्ग कहते हैं। *

होता है हर वर्ष बोट्स रेस का आयोजन

हर साल अगस्त माह में यहां पुनमड़ा झील में नेहरू ट्रॉफी बोट रेस आयोजित होती है, जिसमें सैकड़ों लोग चुंदवल्ली यानी सांप जैसी मुंह वाली लंबी नावों पर सवार होकर रेस में शामिल होते हैं। यह रेस केवल खेल नहीं होती बल्कि केरल की समृद्ध संस्कृति का एक अनोखा उत्सव है। यह रेस 1952 में भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की यहां यात्रा के दौरान आरंभ हुई थी।

हाल में ही कश्मीर स्थित चिनाब नदी पर बने चिनाब ब्रिज की डिजाइन और तकनीकी विशेषताओं ने इसे दुनिया भर में चर्चा का विषय बना दिया है। इस ब्रिज की विशेषताओं पर एक नजर।

इंजीनियरिंग का नायाब नमूना चिनाब ब्रिज

{ अचीवमेंट / सुनील कुमार महला }

हाल ही में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर में नवनिर्मित चिनाब पुल का उद्घाटन किया। यह (चिनाब पुल) दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल है।

ब्रिज की खासियतें: चिनाब ब्रिज स्टील और कंक्रीट से बना आर्च ब्रिज है, जो रियासी जिले के बक्कल और कौरी गांवों को जोड़ता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह नदी के तल से 359 मीटर (लगभग 1,178 फीट) ऊंचा है। यानी यह पेरिस के मशहूर एफिल टॉवर से 35 मीटर और दिल्ली की कुतुब मीनार से करीब 5 गुना ऊंचा यानी कि 287 मीटर ऊंचा है। यह 266 किमी प्रति घंटे तक की हवा की गति का सामना कर सकता है। यह ब्रिज भूकंपीय क्षेत्र पांच में स्थित है इसलिए इसे इतना मजबूत बनाया गया है कि रिक्टर स्केल पर 8 तीव्रता के भूकंप को भी सहने में सक्षम है। यही नहीं इसे 40 टन टीएनटी के बराबर विस्फोट सहने में सक्षम बनाया गया है। इसमें ऐसे खास जंगरोधपेंट का इस्तेमाल किया गया है, जो इसे 20 साल तक जंग से बचाएगा। पुल में ऐसी तकनीक स्थापित की गई है कि कोई भी खतरा होने पर वार्निंग अलार्म खुद ही बजने लगेगा। पुल में 112 सेंसर लगाए गए हैं, जो हवा की गति, टेंपरेचर और कंपन आदि की जानकारी देंगे।

चिनाब ब्रिज : दुनिया का सबसे बड़ा आर्च ब्रिज

सवा सौ साल है उम्र: 1315 मीटर लंबा यह ब्रिज, उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेलवे लिंक (272 किमी. लंबा) प्रोजेक्ट का हिस्सा है। इस पुल का निर्माण 1486 करोड़ की लागत से किया गया है। इस ब्रिज की नींव 2003 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने रखी थी। इसके निर्माण में 22 साल लगे और इसकी अनुमानित उम्र 120-125 साल है।

निर्माण में प्रयुक्त सामग्री: जानकारी के मुताबिक, इस ब्रिज को बनाने में 28,660 से 30,000 मीट्रिक टन स्टील का इस्तेमाल किया गया है। इसके साथ ही 46,000 क्यूबिक मीटर कंक्रीट का भी यूज हुआ है। इसके निर्माण में 6 लाख से ज्यादा नट बोल्ट भी यूज किए गए हैं। यह भी काबिले-तारीफ है कि इस पुल को बनाने में नदी के प्रवाह में अवरोध नहीं पहुंचाया गया है, नदी में कोई पिलर नहीं लगाया गया है, बल्कि इसे आर्च तकनीक से बनाया गया है। इस पुल को किसी हमले से बचने के लिए ब्लास्ट प्रूफ स्टील से तैयार किया गया है। इस ब्रिज के निर्माण में डीआरडीओ की अचूक प्लानिंग शामिल रही है। इसे बनाने के लिए उत्तर रेलवे के साथ कोंकण, अफकान और केआरसीएल ने काम किया। इसके साथ ही भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण जैसी संस्थाएं भी जुड़ी रहीं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इसमें आईआईटी रुड़की और आईईटी दिल्ली ने भी अपना योगदान दिया है।

कई तरह से महत्वपूर्ण: यह अनोखा पुल न सिर्फ कश्मीर घाटी को पूरे भारत से जोड़ेगा, बल्कि क्षेत्र में व्यापार, पर्यटन और औद्योगिक विकास को भी नई गति देगा। चिनाब ब्रिज, दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। चिनाब रेलवे ब्रिज को बनाने में भले ही 22 साल लगे हों, लेकिन अब इसके शुरू होने के बाद कश्मीर घाटी और जम्मू के बीच सीधा रेल रास्ता बन जाएगा। यह पहली बार होगा जब लोग कन्याकुमारी से सीधे ट्रेन के जरिए कश्मीर घाटी तक जा सकेंगे। यह ब्रिज भी अपने आप में एक आकर्षक टूरिस्ट डेस्टिनेशन बन गया है। इससे देश की सैन्य ताकत को भी कहीं न कहीं सपोर्ट मिलेगा, क्योंकि बर्फबारी के दिनों में कई बार कश्मीर से संपर्क कट जाता था। साथ ही कई क्षेत्रों में आपात स्थिति में सेना को अपनी मूवमेंट में इस बर्फबारी के समय काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। अब चिनाब रेलवे ब्रिज के निर्माण से हर मौसम में कश्मीर पहुंचना सेना के लिए आसान हो जाएगा। साथ ही जम्मू-कश्मीर आने वाले पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र होगा यह अनोखा चिनाब ब्रिज। *

पास में है अनोखा अंजी ब्रिज

6 जून 2025 को ही चिनाब पुल का उद्घाटन करने के बाद प्रधानमंत्री ने इसी रेल ट्रैक पर बने अंजी ब्रिज का भी लोकार्पण किया। यह देश का पहला ऐसा रेलवे ब्रिज है, जो केबल स्टेंड तकनीक पर बना है। रिपोर्ट्स के अनुसार यह पुल नदी तल से 331 मीटर की ऊंचाई पर बना है। 1086 फीट ऊंचा एक टावर इसे सहारा देने के लिए बनाया गया है, जो करीब 77 मंजिला बिल्डिंग जितना ऊंचा है। यह ब्रिज अंजी नदी पर बना है, जो रियासी जिले के कटरा को बनिहाल से जोड़ता है। चिनाब ब्रिज से इसकी दूरी महज 7 किमी है। इस पुल की लंबाई 725.5 मीटर है। इसमें से 472.25 मीटर का हिस्सा केबल्स पर टिका हुआ है।

शारीरिक-आर्थिक सेहत सुधारे सेब

{ उपयोगी पेड़ / वीना गौतम }

भारत में सेब अभिजात्य फलों में से एक माना जाता है। डॉक्टर भी हर किसी को, रोगों से बचने के लिए रोज एक सेब खाने की सलाह देते हैं। सेब के स्वास्थ्य संबंधी फायदों की वजह से इसकी मांग हमेशा, हर मौसम में बनी रहती है। यही कारण है कि सेब प्रायः महंगा ही बिकता है। जाहिर है, सेब की खेती आर्थिक दृष्टि से किसानों के लिए भी बहुत फायदेमंद होती है।

कहां होती है सेब की खेती: भारत में सेब के पेड़ मुख्यतः पर्वतीय और ठंडी जलवायु वाले इलाकों में उगते हैं। लेकिन जलवायु परिवर्तन और कृषि क्षेत्र में हुए तमाम तकनीकी उन्नति के कारण अब सेब मैदानी राज्यों में भी किसानों द्वारा उगाया जा रहा है। देश में पारंपरिक रूप से सेब का उत्पादन हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड और सिक्किम जैसे राज्यों के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सदियों से होता रहा है। लेकिन अब हिमालय से सटे मैदानी राज्यों जैसे- पंजाब, हरियाणा और मध्य प्रदेश के कुछ जिलों में भी सेब की कुछ प्रजातियां उगाई जा रही हैं।

सेहत के लिए गुणकारी: सेब में कई तरह के विटामिंस, मिनरल्स, एंटीऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं। यह अनेक रोगों से बचाता है और शरीर को पोषण देता है। कहावत भी है कि रोज एक सेब खाइए, रोगों से दूर रहिए।

किसानों के लिए फायदेमंद: सेब एक नकदी फसल है। यह किसान के लिए ही आर्थिक सहायता नहीं पहुंचाता, बल्कि आम कृषि मजदूरों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा करता है। सेब की बागवानी में पौधा रोपण से लेकर उसकी कटाई, छंटाई, ग्रेडिंग, पैकिंग और परिवहन तक में कई लोगों को रोजगार मिलता है।

अनुमानित आमदनी: सेब का बगीचा 5 से 7 साल में फल देना शुरू कर देता है। सेब के एक पेड़ से किसान को हर साल 100 से 200 किलो फल मिल जाते हैं। औसतन एक हेक्टेयर सेब का बगीचा हर साल लगभग 15 टन उपज देता है, जिससे किसान को सारे खर्च निकालकर 10 से 15 लाख रुपए तक का फायदा हो सकता है। लेकिन इसके लिए पहले किसान को हर साल सेब के बागीचे में 4 से 5 लाख रुपए खर्च करने पड़ते हैं। बाजार चाहे कितना भी डाउन हो, सेब की खेती किसानों को फायदा ही पहुंचाती है। *

बुरे सपनों को दूर रखे लकी चार्म ड्रीम कैचर

{ रोचक / शिखर चंद जैन }

आपने गिफ्ट शॉप, ऑनलाइन शॉपिंग साइट्स या छोटे बच्चों के पालने पर लगे ड्रीम कैचर्स जरूर देखे होंगे। यह एक छोटा सा वृत्ताकार फ्रेम (हूप) होता है, जिसमें मकड़ी के जाल की तरह धागों से बुनी हुई आकृति होती है, कुछ मोती होते हैं और पंख (फेदर्स) लटके हुए होते हैं। यह सिर्फ सजावट की वस्तु नहीं है, इसे वास्तुशास्त्र में भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

कैसे हुई शुरुआत: ड्रीम कैचर का आविष्कार करने का श्रेय अमेरिकी जनजाति ओजिब्वे (चिप्पेवा) के लोगों को जाता है। इस जनजाति के लोग कनाडा और नॉर्थ अमेरिका के कुछ क्षेत्रों में रहते हैं। ओजिब्वे जनजाति के लोगों की मान्यता थी कि उनके सभी बच्चों और बड़ों की सुरक्षा असिबाइकाशी नामक एक रहस्यमयी स्पाइडर वूमेन करती है। जब इस जनजाति के लोगों की आबादी बढ़ने लगी और वे दूर-दूर तक जाकर रहने लगे, तो असिबाइकाशी ने स्पाइडर वेब के साथ एक जादुई यंत्र/ताबीज तैयार किया और अपने-अपने परिवार के सदस्यों की सुरक्षा के लिए ओजिब्वे समुदाय की महिलाओं को भी यह यंत्र बनाना सिखाया। उस यंत्र को ही आज वास्तु और फेंगशुई की दुनिया में 'ड्रीम कैचर' के नाम से जाना जाता है।

तेजी से हुआ पॉपुलर: ओजिब्वे जनजाति के लड़के और लड़कियों के विवाह में अन्य वस्तुओं के साथ ड्रीम कैचर्स का भी आदान-प्रदान किया जाने लगा। नतीजतन ड्रीम कैचर का प्रचलन दूसरी जनजातियों, जैसे लकोटा जनजाति आदि में भी बढ़ने लगा। धीरे-धीरे ड्रीम कैचर विभिन्न अमेरिकी जातियों/समुदायों के साथ-साथ अन्य सभ्यताओं-संस्कृतियों में भी लोकप्रिय होने लगा।

ड्रीम कैचर के पार्ट्स: ड्रीम कैचर में मुख्य रूप से एक वृत्त, धागों से बुना जाल, बीड और फीदर्स होते हैं। हर तत्व का अपना महत्व और प्रतीक है।

जीवन चक्र का प्रतीक वृत्त (हूप): यह हमारे जीवन चक्र का प्रतीक माना जाता है। यह भी मान्यता है कि यह वृत्त सूर्य और चंद्र का प्रतिनिधित्व करता है।

बुरे सपनों को ट्रैप करता जाल (वेब): जैसे मकड़ी अपने जाल में शिकार फंसा लेती है, वैसे ही ड्रीमकैचर का वेब बुरे सपनों को जाल में फंसा लेता है। बीचों-बीच जो छेद होता है, वह अच्छे सपनों के प्रवेश द्वार की तरह काम करता है।

सपनों की सीढ़ी पंख (फेदर): ड्रीम कैचर में लगे पंख को अच्छे सपनों का वाहक या अच्छे सपनों की सीढ़ी माना जाता है। आजकल पक्षियों के पंख के स्थान पर जेमस्टोन भी लगाए जाते हैं।

मकड़ी और बुरे सपने हैं बीड: ड्रीम कैचर के बीच मे लगा सिंगल बीड मकड़ी का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि इसके इर्द-गिर्द लगे मल्टीपल बीड्स पकड़े गए बुरे सपनों के प्रतीक होते हैं।

लकी चार्म बना ड्रीम कैचर: आज दुनिया के कई देशों में ड्रीम कैचर को माइंडफुलनेस, सुरक्षा और सकारात्मकता के प्रतीक के रूप में सजाया जाता है। लोगों के लिए एक लकी चार्म है ड्रीम कैचर। *

बारिश के मौसम में रिमझिम फुहारों से हर किसी का मन खिल उठता है। इस सुहाने मौसम में काले-काले बादलों से झरती बारिश की बूंदों से भीगी कई यादगार हिंदी फिल्में और कर्णप्रिय गीत कभी भुलाए नहीं जा सकते। ऐसी ही कुछ फिल्मों और सदाबहार गानों पर एक नजर।

फिल्मों-गीतों को खूब भिगोया बारिश की रिमझिम फुहारों ने

{ सिने जगत / चेतना झा }

अपने शुरुआती दौर से ही हिंदी सिनेमा ने बरसात के मौसम की खूबसूरती को पर्दे पर तरह-तरह से पेश किया है। कई फिल्मों के नाम और उनकी कहानी के प्लॉट में बरसात शामिल रही है तो अनेक फिल्मों में बारिश से जुड़े गीतों ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। उम्मीदों को बरसती बूंदों के जरिए कभी पर्दे पर दिखाया गया है तो विरह के गीत के लिए भी सावन-भादो का सहारा लिया गया है। खासतौर पर प्रेमी जोड़ों को भिगोने वाले रोमांस के लिए बरसात का मौसम बॉलीवुड में सबसे मुफीद माना जाता रहा है।

पर्दे के बाहर मचलता मन: कभी मशीनी बारिश में शिफॉन की साड़ी पहन कर अपने नृत्य से नायिका के गीत चर्चित हुए तो कभी वास्तविक बारिश में मुंबई की सड़कों पर 'रिमझिम गिरे सावन' जैसे यादगार गीत फिल्माए गए। आज सोशल मीडिया के दौर में बहुत से यंगस्टर्स ऐसे गीतों को रिक्रिएट कर रील्स बनाने के लिए खूब उतावले दिखते हैं। यही तो जादू है बॉलीवुड फिल्मों की बारिश का। नायक-नायिकाओं की प्यार भरी तकरार, इंकार और फिर इजहार की अनगिनत दास्तानें टिप-टिप बारिश के बीच इतने दिलकश अंदाज में फिल्माई जाती रही हैं कि रियल लाइफ में भी कुछ लोग इन्हें खुद अनुभव करने के लिए मचल उठते हैं।

'आज रपट जाएं' गाने के एक दृश्य में अमिताभ और स्मिता पाटिल

गीतों में उम्मीद-मिलन-विरह: 'पुरवा के झोंकवा से आयो रे संदेसवा कि चल आज देसवा की ओर' हो या 'घनन-घनन घिर आए बदरा...' फिल्मों में भी मानसूनी बादल, उम्मीद-उत्साह का संचार भरपूर करते हैं। 'तुम्हें गीतों में ढालूंगा, सावन को आने दो...' 'मौसम है आशिकाना, ऐ दिल कहीं से उनको ऐसे में ढूंढ लाना...' मिलन और उम्मीद की बूंदों से भीगे ऐसे बेशुमार गाने सिनेप्रेमियों के पसंदीदा गीतों में शामिल हैं। फिल्मों में बारिश का सावन का महीना, न केवल मिलन के गीत गाता है, बल्कि विरह की तान भी छेड़ता है। याद आता है, मोहम्मद रफी का वह गीत, 'अजहू न आए बालमा, सावन बीता जाए।'

बरसात पर केंद्रित फिल्में: कई फिल्में तो बरसात को केंद्र में रखकर ही फिल्माई गईं। कई फिल्मों के नाम ही बरसात और बरसात के प्रमुख महीने सावन से जुड़े हुए हैं। शुरुआत 1945 में आई मोतीलाल और शांता आप्टे की फिल्म 'सावन' से हुई। 1949 में आई राजकपूर की फिल्म 'बरसात' ने तो तय कर दिया कि बरसात फिल्मों की सफलता का अचूक मंत्र है। बाद में बरसात नाम की दो फिल्में और बनीं। इन दोनों के नायक बॉबी देओल थे। 1960 में भारत भूषण और मधुबाला की 'बरसात की रात' आई। 1981 में अमिताभ बच्चन और राखी की हिट जोड़ी से सजी 'बरसात की एक रात' रिलीज हुई। 'बरखा बहार' फिल्म में भी बारिश का रोमांटिक अंदाज नजर आया था। 'मानसून वेडिंग' नाम से भी एक फिल्म काफी चर्चित हुई थी। 'तुम मिले', 'लगान', 'आया सावन झूम के', 'प्यासा सावन', 'सावन की घटा', 'सोलहवां सावन', 'सावन के गीत', 'प्यार का पहला सावन', 'सावन का महीना', 'सावन को आने दो', 'सावन-भादो', इस श्रंखला में कई फिल्में शामिल हैं।

ये गीत भी हैं यादगार: 'प्यार हुआ इकरार हुआ ...' राजकपूर और नरगिस का बारिश के दौरान एक छतरी के नीचे चलते हुए यह गीत गाना, उस जमाने के रोमांस की शायद पराकाष्ठा ही थी। फिल्म 'श्री 420' का यह गाना आज भी मन को प्यार की भावना से भिगो देता है। बरसात, प्रेमियों के लिए कितनी कीमती होती है, यह सरेआम बयां किया फिल्म 'रोटी कपड़ा और मकान' के एक गीत में जीनत अमान ने। जब वो दो टकिए की नौकरी के पीछे लाखों का सावन कुर्बान होने की शिकायत करती हैं। यह जीनत के इस गाने से जाहिर होता है कि 'हाय-हाय ये मजबूरी, ये मौसम और ये दूरी' आज भी कई लोगों को नून-तेल-हल्दी के फेर में गुम हो रहे रोमांस की याद दिला जाता है। इसी तरह मधुबाला और भारत भूषण पर फिल्माया गाना 'जिंदगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात' को भी नहीं भुलाया जा सकता है। इसी तरह 'चांदनी' फिल्म का गाना 'लगी आज सावन की फिर वो झड़ी है', आज भी दिल को तरंगित कर जाता है।

माना गया हिट फॉर्मूला: दर्शकों द्वारा बारिश पर फिल्माए गीतों को पसंद किए जाने की वजह से कई फिल्मों में तो हिट फार्मूले की तरह बारिश के गाने को फिल्मों में जबर्दस्ती शामिल किया गया। याद कीजिए अमिताभ बच्चन और स्मिता पाटिल पर फिल्माया गया 'नमक हलाल' फिल्म का गाना, 'आज रपट जाएं तो हमें न उठइयो..', जो सुपरहिट रहा था। इसी तरह फिल्म 'गुरु' में 'बरसो रे मेघा...' गाने पर ऐश्वर्या राय ने बेहद दिलकश नृत्य किया था। बरसात के सीन पर फिल्माए ऐसे फेमस गीतों में 'दिल तो पागल है' का गाना 'कोई लड़की है, जब वो हंसती है, बारिश होती है...' फिल्म 'मोहरा' का गाना 'टिप-टिप बरसा पानी', 'फना' का गाना 'ये साजिश है बूंदों की' भी शामिल हैं। इसी कड़ी में याद आता है '1942 ए लव स्टोरी' का गाना 'रिम-झिम रिम-झिम, रुम-झुम रुम-झुम...' कहने का सार है कि बारिश की फुहारों ने हिंदी फिल्मों और गानों को खूब भिगोया है। *